ठाकुर शोभासिंह शासकीय महाविद्यालय

पत्थलगाँव, जिला – जशपुर (छ.ग.)

संत गहिरागुरू विश्वविद्यालय, अम्बिकापुर – (छ.ग.) से सम्बद्ध

प्रयास

2021

ठा. शोभा सिंह शासकीय महाविद्यालय
26 नवम्बर
संविधान दिवस
तालुका विधिक सेवा समिति, पत्थलगांव
GOVT.COLLEGE PATHALGAON
JASHPUR(M.P.)

ठा. शोभा सिंह शासकीय महाविद्यालय
26 नवम्बर
संविधान दिवस
GOVT.COLLEGE PATHALGAON
JASHPUR(M.P.)

राष्ट्रीय सेवा योजना
सात दिवसीय विशेष शिविर
ग्रामीण विकास - "नरवा, गरवा, घुरवा, बाड़ी एवं युवा"
प्रायोजक : संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय
सरगुजा, अम्बिकापुर (छ.ग.)
शासकीय महाविद्यालय, जशपुर (छ.ग.)

OPPO A5 2020

MATHS IN EVERYDAY LIFE
2021.12.21 13:32

HAPPY

TEACHERS DAY
GOVT.COLLEGE PATHALGAON
JASHPUR(M.P.)
2021.09.06 13:59

शिक्षक दिवस

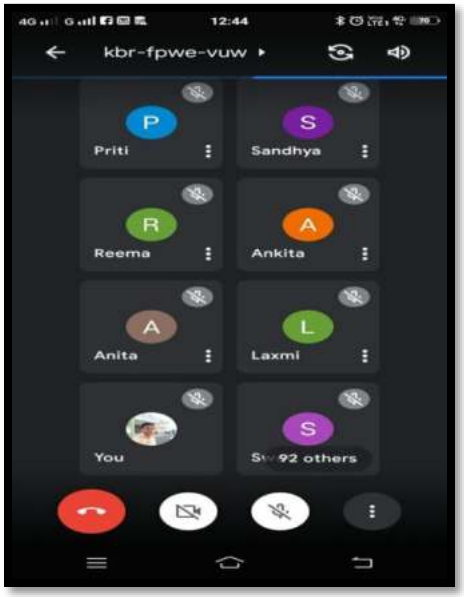

गणित दिवस एवं आनलाईन पढ़ाई

आयोजक शा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय
सीतापुर जिला–सरगुजा (छ.ग.)
परिक्षेत्र/राज्य स्तरीय प्रतियोगिता
प्रतियोगिता :–
से

खेल प्रांगण से...

महाविद्यालय की विजेता टीम

COMBINED ANNUAL TRAINING CAMP RAIGARH

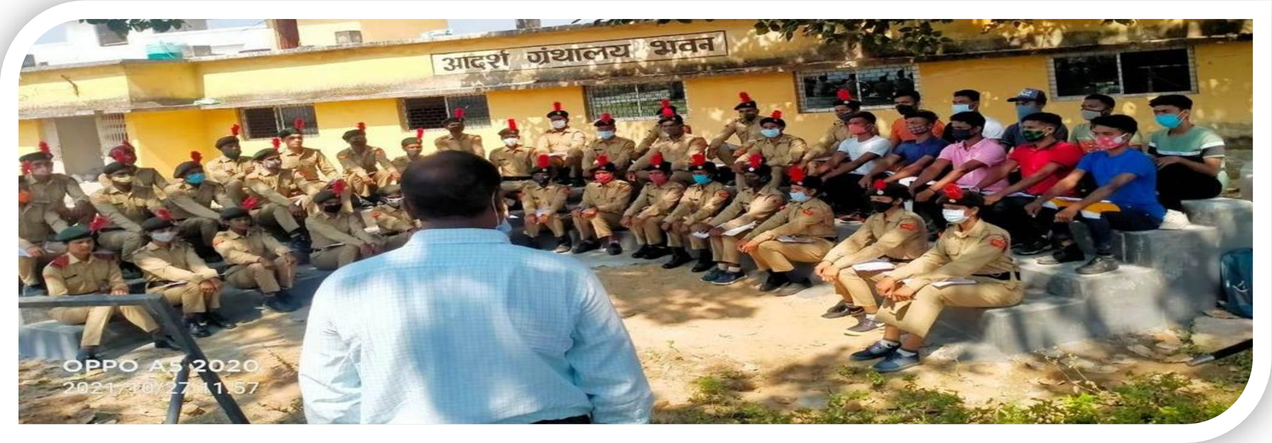

राष्ट्रीय कैडेट कोर के छात्रों द्वारा स्वच्छता अभियान व महाविद्यालय में कोविड टीकाकरण अभियान

संपादकीय

''प्रयास'' महाविद्यालय की यह पत्रिका आस्था, विश्वास, एवं सत्य पर आधारित है। इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य छात्र – छात्राओं तथा प्राध्यापकों/कर्मचारियों की छुपी हुई प्रतिभा व उनके मन – मस्तिष्क के विचारों को प्रकट करना है। इस पत्रिका में कविता, कहानी, सुविचार, गजल, यात्रा वृतांत, व्यंग्य, अनुभव, सामान्य ज्ञान इत्यादि का समावेश है जिससे छात्र – छात्राओं में कल्पना शक्ति, विचारों का आदान – प्रदान, लेखन कला की प्रतिभा को निखारने, तथा रचनात्मक लेखन का भी विकास होगा। 'प्रयास' पत्रिका जैसा कि नाम से ही प्रतीत होता है कि यह विद्यार्थियों के जीवन शैली को निखारने एवं निरंतर प्रगति की ओर अग्रसर होने का तथा अपनी जड़, चेतन, कल्पना शक्ति को बेहतर बनाने का प्रयास है।

प्रयास करो अंतिम क्षण तक, फिर भले जो भी हो अंजाम ।
तीव्र गति से चलकर पथ में, तुम पीना अनुभवों का जाम ।।
मार्ग मुश्किलों से भरे होंगें, नहीं टेकना तुम अपने पांव।
कुछ खोने को नहीं पास तेरे, लगा देना जीवन का दांव।।
निरंतर चलना रूकना नहीं, एक पल न करना आराम।
संघर्ष अगर तू करता रहा, तो सुखद मिलेगा परिणाम।।
दोनों विकल्प है पास तेरे, इनको चुनना होगा तेरा काम।
आज जी भर करले आराम, या मेहनत कर कल पा ईनाम।।

उक्त पंक्तियों से तात्पर्य है कि हमें निरंतर प्रयास करते रहना चाहिए तभी सफलता संभव है । यदि धैर्य खोये बिना किसी कार्य को करने के लिए बार – बार अभ्यास किया जाये तो सफलता निश्चित है। यह पत्रिका के द्वारा विद्यार्थियों में तर्क शक्ति, रचनात्मक एवं कलात्मक शक्ति को वृद्धि करने का सार्थक प्रयास है। इसी तर्ज पर 'प्रयास' पत्रिका का प्रकाशन प्रति वर्ष किया जा रहा है जो हमें सफलता की ओर निरंतर बढ़ते रहने के लिए प्रोत्साहित करता है तथा हमें आत्माभिव्यक्ति का सहज अवसर प्रदान करता है।

मेरे और प्रकाशन मण्डल की ओर से उन सभी का आभारी हूँ जिन्होने अपनी रचनात्मक लेखों को प्रस्तुत कर पत्रिका के सौंदर्य को वृद्धि करने में सहयोग प्रदान किये हैं। महाविद्यालय के छात्र – छात्राओं तथा समस्त विदुषी एवं विद्वान प्राध्यापकों/कर्मचारियों का जिनके सहयोग से ही प्रतिवर्ष पत्रिका का सफल प्रकाशन हो रहा है। अंत में महाविद्यालय के प्राचार्य सरल, तेजस्वी एवं ऊर्जावान श्री डी.के. अम्ब्रेला जी का आभार प्रकट करना चाहूंगा जिनके कुशल मार्गदर्शन एवं निर्देशन में ''प्रयास'' पत्रिका का प्रकाशन हुआ है। आशा करता हूं कि आगे भी सभी का सहयोग प्राप्त होता रहेगा।

इसी आशा और विश्वास के साथ.........

विक्रम जीत सिंह
(संपादक 'प्रयास' पत्रिका)

प्राचार्य की कलम से

प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी ''**प्रयास**'' पत्रिका का यह अंक आपके हाथ में देते हुए हर्षित हो रहा हूँ। यह सफर हमने सबके सहयोग, सद्भावना, सामंजस्य एवं सहविचार से व्यतीत किये हैं। ''प्रयास'' पत्रिका के द्वारा छात्र–छात्राओं के मानसिक, बौद्धिक एवं व्यक्तित्व का विकास होता है यह पत्रिका छात्र–छात्राओं के रचनात्मक प्रतिभाओं को मुर्त रूप प्रदान करता है तथा उनके बहुमुखी विकास के लिए बहुपयोगी सिद्ध हुआ है। 'प्रयास' पत्रिका प्रकाशन का उद्‌देश्य विद्यार्थियों में कल्पनाशीलता, मौलिकता, शैक्षणिक परिवेश एवं नई दृष्टि विकसित करना है। इस पत्रिका के द्वारा हमारा प्रयास है कि छात्र – छात्राओं का स्वर्णिम भविष्य बनाना, उनके संस्कारों में निखार लाना, उनकी प्रज्ञा को प्रखर करना, मानवीय मूल्यों का विकास, स्वावलंबी व स्वाभिमानी बनाना और उन्हें सफलता के उच्चतम सोपान पर चढ़ने हेतु प्रेरित करना, यह हमारा पुनीत कर्तव्य है। इस पत्रिका के माध्यम से महाविद्यालय के छात्र – छात्राओं को अपनी लेखनी और अभिव्यक्ति की प्रतिभा दिखाने का एक अच्छा अवसर प्राप्त हो रहा है।

महाविद्यालय की यह पत्रिका एक सराहनीय कार्य है। इसमें प्रकाशित सामग्री को देखकर कोई भी व्यक्ति इस संस्था की वार्षिक गतिविधियों से परिचित हो सकता है। यह पत्रिका इस महाविद्यालय का आईना है जिसमें महाविद्यालय का स्वरूप स्पष्ट दिखाई पड़ता है। छात्र – छात्राओं के उज्जवल भविष्य की कामना के साथ महाविद्यालय के इस संस्था को ''प्रयास'' पत्रिका के लिए कोटिशः बधाई एवं शुभकामनाएं।

इसी आशा व विश्वास के साथ आप सभी के उज्जवल भविष्य की मंगलकामना.....

डी.के. अम्ब्रेला
प्राचार्य

शुभकामना संदेश

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि प्रति वर्ष की भाँति इस वर्ष भी महाविद्यालय के द्वारा अपने विद्यार्थियों, सहकर्मी शिक्षकों एवं जनसामान्य में लेखन के प्रति रूचि बढ़ाने तथा अपने महाविद्यालय की गतिविधियों को जनसामान्य तक पहुंचाने के उद्देश्य से अपनी ई–पत्रिका ''प्रयास'' का प्रकाशन किया जा रहा है।

मुझे आशा है कि अपनी ई – पत्रिका ''प्रयास'' उमंग और आशाओं को ही व्यक्त नहीं करेगा अपितु यह महाविद्यालय में स्वच्छ वातावरण सहित अनेक शैक्षिक नवाचार विकसित करेगा। यह गौरव की बात है कि यह पत्रिका विद्यार्थियों में कल्पनाशक्ति, विकासपरख व उन्हें समस्या समाधान हेतु कुशलता प्रदान कर रहा है।

इस अवसर पर महाविद्यालय परिवार एवं प्रकाशन मण्डली को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

प्रो. आर. एस. कांत

[illegible]

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ संख्या
1	कौआ का विवाह	16
2	समय	17
3	बेटी को पढ़ाये रखना + माँ	18
4	पापा	19
5	भाई	20
6	कुछ हसीन लम्हें + बेटियां	21
7	हिम्मत	22
8	मेरे बचपन के साथी	23
9	शिक्षक	24
10	लोग बुनते हैं सपने	25
11	बचपन की यादें + प्रकृति	26
12	बचपन के लम्हें + सफलता के अनमोल विचार	27
13	मेरे जीवन का अनुभव	28
14	मेरे महाविद्यालय का प्रथम वर्ष का अनुभव	29
15	जीवन मे समय का महत्व	30
16	ऑनलाइन शिक्षा	31
17	एक कविता हर माँ के नाम + बेटियां	32
18	ENTIRE CLASS FAIL	33
19	जिंदगी + शिक्षक हमारे मार्गदर्शक	34
20	सुविचार + प्रेरक कथन	35
21	चहकती चंचल सी मन काया	36
22	शिक्षक को समर्पित कविता	37
23	अर्थ जब खोने लगे	38
24	पापा	39
25	साहसी लड़की	40
26	Role of IQAC in college	41
27	Knowledge is power	42

क्र.	विषय	पृष्ठ संख्या
28	Life path	43
29	रसायन से सीखो	44
30	व्यक्तित्व विकास में खेलों की भूमिका	45
31	त्यौहार की तरह मनाया गया रासेयो का सात दिवसीय शिविर	46–47
32	राजनीति एक सकारात्मक सोच	48
33	गणित और सूझ – बूझ	49

कौआ का विवाह

[illegible]

रेखा बारिक

बी.एससी. (प्रथम वर्ष)

समय

समय का हमारे जीवन में बहुत अधिक महत्व है। यह हमारे जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। समय इस पृथ्वी पर सबसे कीमती वस्तु है, जिसकी तुलना किसी से भी नहीं की जा सकती है। इस संसार में सब कुछ समय पर निर्भर करता है। समय से पहले कुछ भी नहीं हो सकता है। समय धन से भी ज्यादा कीमती होता है, क्योंकि यदि धन खर्च कर दिया जाए तो उसे वापस प्राप्त किया जा सकता है, लेकिन यदि हम समय को नष्ट कर दिए तो उसे वापस प्राप्त नहीं किया जा सकता है। समय बिना किसी का इंतजार किए अपने समय पर चलती रहती है इसलिए हमें समय का सदुपयोग करना चाहिए क्योंकि समय अगर एक बार चला गया तो यह वापस लौट कर नहीं आता है। कबीरदास जी कहते हैं –

कल करे सो आज कर, आज करे सो अब।
पल में प्रलय होएगी, बहुरि करेगा कब।।

अर्थ – कबीर दास जी समय की महत्ता बताते हुए कहते हैं कि जो कल करना है उसे आज करो और जो आज करना है उसे अभी करो। कुछ ही समय में जीवन खत्म हो जाएगा फिर तुम क्या कर पाओगे।

इसलिए हमें हमारा हर काम समय को ध्यान में रखकर करना चाहिए। समय की बर्बादी हमें और हमारे भविष्य को बर्बाद करती है। एक तरफ तो कहा जाता है कि सब्र का फल मीठा होता है, वहीं दूसरी तरफ कहते हैं कि वक्त किसी का इंतजार नहीं करती। यह बिल्कुल सही बात है कि समय किसी का इंतजार नहीं करती है। समय का सदुपयोग हमारे जीवन को मूल्यवान बनाता है। समय बहुत ही बलवान होता है क्योंकि समय के पास इतना समय नहीं है कि वह आपको दोबारा समय दे सके। यदि समय एक बार हमारे हाथ से निकल गया तो वह दोबारा लौटकर नहीं आता है। इसलिए हमें सदैव समय का सदुपयोग करना चाहिए।

मुस्कान गोयल
बी. एससी. (अंतिम वर्ष)

बेटी को अपनी पढ़ाये रखना

जीवन की फुलवारी को सजाये रखना,
बेटी को अपनी पढ़ाये रखना।
बेटी नहीं है अब बेटो से कम,
बेटी भी रख आई है चांद पे कदम,
शिक्षा का अमृत पिलाये रखना।

बेटी को अपनी पढ़ाये रखना,
जीवन की फुलवारी को सजाये रखना,
भगिनी निवेदिता गढ़ो, झांसी जैसी शान,
सावित्री झल्कारी, लक्ष्मीबाई महान
हौसला इनका बढाये रखना।

बेटी को अपनी पढ़ाये रखना,
जीवन की फुलवारी को सजाये रखना।
देवी दुर्गा सरस्वती काली, सबका करती कल्याण है,
ये भी तो बेटियां हैं, हमको इसका ज्ञान है।
हृदय में अपने बिठाये रखना,
बेटी को अपनी पढ़ाये रखना,
जीवन की फुलवारी को सजाये रखना।

माँ

माँ तो माँ होती है,
कभी सुनहरी धूप,
तो कभी ममता की छांव होती हैं।
मां कामयाबी की हाथ,
तो कभी मंजिल की पांव होती हैं।
माँ जिंदगी के समंदर की नाव होती है,
माँ तो पूरे खुशियों की गांव होती है।
उम्मीदों की आशा है माँ,
जीवन की परिभाषा है माँ।
माँ है तो हम हैं, माँ है तो हम सब हैं।

मौसम गुप्ता बी.एससी. (अंतिम वर्ष)

पापा

आपके नाम से ही जाने जाते हैं पापा,
भला इससे बड़ी शोहरत मेरे लिए क्या होगी।
मां – पापा पर भी उतना ही विश्वास रखो,
जितनी दवाइयों पर रखते हो।
बेशक थोड़े कड़वे होंगे,
पर आपके लिए फायदेमंद होंगे।
पिता नीम के पेड़ जैसे होते हैं,
उसके पत्ते भले ही कड़वे हो पर वो छाया ठंडी देते हैं।
चाहे कितने अलार्म लगा लो,
सुबह उठने के लिए पापा की एक आवाज ही काफी है।
बिना बताए वो हर बात जान जाते हैं,
मेरे पापा मेरी हर बात मान जाते हैं।

उपमा पैकरा
बी. एससी. (अंतिम वर्ष)

भाई

मेरा भाई मेरी जान है।
साथ हमेशा देता है, जैसे कि मेरी परछाई है ,
कोई भी गलत काम करूं तो डांटता समझाता वही है।
रुलाता भी वही है और आंसू पोंछता भी वही है।
थोड़ा खडूस भी है और थोड़ा अकडू भी है,
दिखने में सुंदर और अक्लमंद भी खूब है।
मेरा भाई मेरी जान है।

प्यार करता भी है पर जताता कभी नहीं है,
छोटा है पर बड़ो जैसा हक जताता भी वही है।
अपनी चॉकलेट खाकर मेरे हिस्से की भी,
छीन कर खाता है, अजीब सा रिश्ता है,
यह हर छोटी–छोटी खुशियों को बड़ा बना जाता है।

पिंकी बेहरा
बी.एससी. (अंतिम वर्ष)

कुछ हसीन लम्हे

ढूंढ रहे हैं कुछ हसीन लम्हे,
कि तलाश मंजिल की अभी जारी है,
हर पल तलाश रहे हैं खुद को,
कि निखरना अभी बाकी है।

हां माना देर से सही मगर हम,
वक्त गुजरने से पहले जागे हैं,
कि कुछ पाने की उम्मीद भी,
दूसरों से नहीं हमें खुद से लगी है।

और जो रोके वो बेशक रोके इस सफर में मुझे,
कि मुझमें सब्र अभी बाकी है,
विश्वास की लौ जो भीतर जली है,
कोशिशें ये हर पहर कि बेजार तो नहीं।

सच कहते हैं देर से ही सही,
एक ना एक दिन मंजिल मिल ही जानी है।

दीपिका चौहान
बी.एससी. (अंतिम वर्ष)

बेटियां

बीज बोये जाते हैं बेटे,
और उग जाती हैं बेटियां।
खाद पानी बेटे में,
और लहराती हैं बेटियां।
एवरेस्ट की ऊंचाई तक धकेले जाते हैं बेटे,
और चढ़ जाती हैं बेटियां।
बेटे तो केवल एक कुल का नाम रोशन करते हैं,
दो कुल की लाज होती हैं बेटियां।
दो कुल की लाज होती हैं बेटियां।।

नेहा चक्रधारी
बी.एससी (अंतिम वर्ष गणित)

हिम्मत

आँखों में अंधेरे छाए थे, ना जाने कितने दर्द इस दिल में समाए हैं,
कभी अपने शहर, कभी दर–दर गुहार लगाती है,
अपने शरीर के दाग का सबूत दिखाती है,
कोई दूर से चलता, कोई अपने से दूर करता,
न जाने इतना साहस कैसे लाती है,
ओ नारी तुमसे कुछ पूछुँ, इतनी हिम्मत तू कहां से जुटाती है,
अदालत में अपने खून से लथपथ दर्द रखती है।
जिसने नोचे, उन दरिंदों के करतूतें बताती है,
तारीख पे तारीख मिलता है,
ओह हमारी अदालत,
एक बलात्कारी को कैसे बचाती है।
इतना कुछ देख ना जाने,
वह हर काली रात कैसे बिताती है,
ओ नारी तू इतनी हिम्मत कहां से लाती है,
शरीर के घाव भर जाते हैं,
उम्मीद के राह मर जाते हैं।
कई धमकी भरे कॉल और मैसेज,
पता नहीं और क्या – क्या ओ नीच कर जाते हैं।
पर मन का घाव नहीं भर पाती है,
ओ अकेली सब से लड़ जाती है,
वह कानून से कितनी गुहार लगाती है,
ओ नारी तू इतनी हिम्मत कहां से लाती है।
अस्पताल में अपनी आखिरी सांस लेती है,
पद दरिंदों को सजा नहीं हो पाती है,
एक नारी का तमाशा बनता है,
हमारे देश का कानून ये कैसा– कैसा रूप दिखाता है।
आँखें बुझ जाती हैं, सांसे डूब जाती हैं,
कानून तारीखों में बढ़ता जाता है,
कहानी के पन्ने सालों साल तक दब जाती हैं,
उसी बीच फिर कोई नारी यही सब दर्द लाती है,
कैसे और पूछुँ भला, ओ नारी तू इतनी हिम्मत कहां से लाती है।

प्रीति यादव
बी.एससी.(अंतिम वर्ष)

मेरे बचपन के साथी

शायद वो बचपन ही था,
जहां कहानियां सच्ची सी लगती थी,
और सच कहानियों सा लगता था।
जहां झूले पे मौका दे दे जो,
वही इंसान अपना सा लगता था।

हर दिन नया सा होता था,
हर शाम मस्तानी सी होती थी।
ना जिक्र थकान का होता था,
ना फिक्र कल की होती थी।

तपती धूप न चुभती थी,
ना कड़कती ठंड का होश होता था।
जो मन में था वही जबान पे था,
रूठना मनाना तो रोज हुआ करता था।

शाबाशियों का शैलाब तो आज भी तरसता है ,
पर छोटी सी एक आलोचना के पीछे ,
वो शैलाब भी अब फीका सा लगता है।
जिंदगी के झूले पर फिसलते हुए,
अब हाथ छुटने से डर लगता है।

अपनो को खुश रखना,
अब जिम्मेदारी सी लगती है।
रेत के ढेर बनाकर खुश होने वाले,
अब अपने काम से तो संतुष्टि कहां मिलती है।

क्या बदल गया इतने सालो में,
कहां छिप गया वो बचपन बहानों में।
क्यों हँसी का कारण ढूंढते हुए,
हर संघर्ष का फसाना अपना सा लगता है।

जिन्दगी के झूले पर फिसल रहे आज भी है,
पर हाथ छुटने से डर अब क्यों लगता हैं।

डिम्पल वसुंधरा
बी. एससी. (अंतिम वर्ष)

शिक्षक

शिक्षक जिन्हें गुरु या टीचर भी कहा जाता है, कहने को कुछ भी कहा जाए लेकिन कोई भी शिक्षक के महत्व की तुलना किसी से भी नहीं की जा सकती है। शिक्षक का कार्य ही है लोगों को ज्ञान के माध्यम से सही रास्ता दिखाना, जिसकी वजह से शिक्षक समाज में सर्वोपरि है।
शिक्षक के महत्व पर एक छोटी सी कहानी – एक बार जर्मन के लोगों के सरकारी अफसरों, वकीलों, डॉक्टरों ने हड़ताल कर दिया। मामला कोर्ट में पहुंचा और सुनवाई हुई और दलील दिया गया कि सभी लोग इतना मेहनत करते हैं फिर भी उनका वेतन शिक्षकों से कम क्यों है? इस पर जज ने टिप्पणी की आप लोग बतायें – आपको डॉक्टर, वकील या अफसर कौन बनाया। शिक्षक ना होते तो शायद आप लोग आज इस मुकाम पर नहीं होते, तो भला बताइये जो आप लोगों का निर्माण किया हो उनका वेतन और आपका वेतन कैसे एक बराबर हो सकता है। जो कुछ भी आप आज हैं उन्हीं की बदौलत हैं, इसलिए इस देश में शिक्षक की तुलना किसी से नहीं की जा सकती हैं।
समाज में शिक्षक का सम्मान होता है वहीं पर सच्चे समाज का निर्माण भी होता है। भारत देश में प्राचीन सदियों से ही ऋषियों, मुनियों, गुरुओं और ज्ञानियों का हमारे समाज पर विशेष प्रभाव है जिसके कारण हमारे देश भारत में गुरुओं को भगवान से भी ऊंचा दर्जा दिया गया है, जिसका वर्णन कबीर दास जी ने एक दोहे के माध्यम से किया है –
गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागू पांय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।।
जिस प्रकार जीवन जीने के लिए सांस लेना आवश्यक है, वैसे ही सुंदर और व्यवस्थित जीवन जीने के लिए हम सभी के जीवन में एक सच्चे शिक्षक का होना भी आवश्यक है।
शिक्षक उस कुम्हार की भांति होता है, जो विद्यार्थी रूपी घड़े को बनाने के लिए बाहरी हाथ से हल्का चोट तो देता है, लेकिन घड़े के अंदर यानी हमारे आत्मा को सहारा भी देता है। एक शिक्षक ही ऐसा है जो अपने विद्यार्थियों को सिखाने के बदले में कुछ भी नहीं लेता है, क्योंकि इस धरती पर मां के बाद वही ईश्वर है।
एक महान शिक्षक एक महान कलाकार होता है, जो कि हम सभी के जीवन के इस रंगमंच का निर्माण करता है । हम क्या कर सकते हैं यह ज्ञान हमें शिक्षक ही देता है।
मेरे सबसे प्रिय शिक्षक वनस्पति विज्ञान के हैं जो अपने चेहरे पर हमेशा एक बड़ी सी मुस्कान लिए रहते हैं। अपने पढ़ाने के तकनीक को वो उभारते है, जो हमें बहुत पसंद है। मुझे उनके पढ़ाने का तरीका बेहद पसंद है। वो हमें जीवन की सच्चाई बताते हैं। वो हमें अपने जीवन के अनुभव बताते हैं और मुश्किल परिस्थितियों में आसानी से निकलने का तरीका सिखाते हैं। वो हमारे सबसे प्रिय शिक्षक हैं तथा ये सभी बच्चों को एक बराबर समझते हैं।
हमारे लिए एक शिक्षक भगवान की तरफ से एक अनमोल तोहफा हैं। शिक्षक समाज में प्रतिष्ठित होते हैं।
ज्ञान से बड़ा कोई दान नहीं,
और गुरु से बड़ा कोई दानी नहीं।

आरती यादव
बी.एससी.(प्रथम वर्ष)

कविता

लोग बुनते हैं सपने

लोग बुनते हैं कुछ इस कदर सपने, कि भविष्य बन जाये।
आज जो पूरा न हो सका, शायद कल हो जाये।
छोटी–सी जिंदगी है,छोटा–सा रास्ता।
क्या पता मंजिल, कब और कहां मिल जाये।
मिले तो पता चले कि, सपने भी पूरे होते हैं।

लोग बुनते हैं कुछ इस कदर सपने, कि भविष्य बन जाये।
सपनों की हर एक उड़ान, कहती है आगे बढ़ो।
क्या पता? सफलता, आपके कदम चूम जाये।
दुश्मनों से करो दुश्मनी, सपनों से करो दोस्ती।
कहो सपनों से हम करेंगे, तुम्हें पूरा चाहे जो हो जाये।

लोग बुनते हैं कुछ इस कदर सपने, कि भविष्य बन जाये।
सपनों की चादर हम बुनते हैं,
क्या पता ? इसकी जरूरत, कब और कहां हो जाये।
रखो संयम और धैर्य जीवन में,
क्या पता ? आपको जो चाहिए, वह कब और कहां मिल जाये।

जीवन एक पतंग है, आज है कल नहीं।
जितनी ऊंचाई छू सकते हो, छू लो दोस्तों !
क्या पता? कल क्या हो जाये।
लोग बुनते हैं कुछ इस कदर सपने, कि भविष्य बन जाये।।

गायत्री
बी.ए.(द्वितीय वर्ष)

बचपन की यादें

वो दिन भी क्या दिन थे,
जब ना दोस्ती का मतलब पता था,
ना दोस्ती किसी मतलब की थी।
ना किसी से बैर था, ना किसी से प्यार था,
वो दिन भी क्या दिन थे।

वो बचपन की पुरानी यादें जब मां पूछती थी
कि टाईम कितना हो रहा है,
तब हमारा जवाब भी कमाल का होता था
घड़ी की छोटी सुई 9 में और बड़ी सुई 6 मे,
वो दिन भी क्या दिन थे।।

वो दिन भी क्या दिन थे,
जब ना पढ़ाई का शौक था,
ना पढ़ाई में मन लगता था,
लेकिन भी स्कूल जाने का एक ही बहाना था,
दोस्तों से मिलना और मस्ती करने का बहाना था।
मम्मी से झूठ बोलना था कि आज स्कूल में लेट हो जाएगा,
लेट होना तो बहाना था, दोस्तों के साथ मस्ती और समय बिताना था,
वो दिन भी क्या दिन थे।

प्रीति ठाकुर
बी.एससी (अंतिम वर्ष बायो)

प्रकृति

हरी हरी खेतों में बरस रही हैं बूंदे,
खुशी – खुशी से आया सावन भर गया मेरा आंगन।
ऐसा लग रहा है, मन की कलियां खिल गई जैसे,
ऐसा कि आया बसंत, लेकर फूलों का जश्न।
धूप से प्यारी मेरे तन की, बूंदों ने दी अंगड़ाई,
झूम उठा मेरा तन मन,
लगता है मैं हूं एक दामन।।
यह संसार है कितना सुंदर,
लेकिन लोग नहीं उतने अकलमंद
यही है एक निवेदन ना करो प्रकृति का शोषण।।।

प्रियंका यादव बी.एससी (तृतीय वर्ष)

कविता

बचपन के लम्हे

वो बचपन का नजारा था,
जिसमें खुशियों का खजाना था।
मम्मी से छुप – छुप कर जाने का बहाना था,
दोस्तों के साथ खेलने का मजा ही कुछ और था।
वो बचपन की यादें, टायर चलाने की बातें, कुछ खास थीं,
वो बचपन का नजारा ही कुछ और था।
मुझमे जिद्दी की अकड़ और पाने की चाहत थी,
खिलौने खरीदने का बहुत शौक था, पर पापा को मना करने की आदत थी।
वो बचपन की बहुत प्यारी यादें थी,
वो बचपन का नजारा था,
जिसमें खुशियों का खजाना था।।

दामोद राम भगत
एम.एससी (प्रथम सेमेस्टर रसायन)

सफलता के अनमोल सुविचार

- सफलता कुछ कर सकने में आती है, असफलता कुछ न कर सकने में आती है।
- सफलता हमारी छोटी–छोटी कोशिशों का जोड़ है।
- सकारात्मक सोच के साथ आपके द्वारा किए गए, सकारात्मक कार्य से सफलता मिलती है।
- संघर्ष जितना कठिन होगा, सफलता भी उतनी बड़ी और शानदार होगी।
- सोच जितना बड़ा होगा, सफलता भी उतनी बड़ी होगी।
- अगर मेहनत आदत बन जाए, तो कामयाबी और सफलता मुकद्दर बन जाती है।

खुशबू बरेट
बी.ए. (अंतिम वर्ष)

मेरे जीवन का अनुभव

ये जीवन बहुत छोटी है पर क्यों? दिखने में बड़ी जरूर लगती है। आपको पता है जिंदगी छोटी क्यों है, क्योंकि हमारी पूरी जिंदगी निकल जाती है लेकिन हमारी इच्छाएं कभी पूरी नहीं होती। समय कब कैसे निकल जाता है पता ही नहीं चलता। अगर वक्त रहते जिंदगी जीना नहीं सीखा तो क्या सीखा। हमारे कर्म ही यह सुनिश्चित करते हैं कि हमारी जिंदगी कैसी होगी। हमें अक्सर जीवन में दो रास्ते मिलते हैं, एक अच्छाई का रास्ता एक बुराई का रास्ता। ये हम पर निर्भर करता है कि हम अच्छा या बुरा, सही या गलत पर फर्क समझ सके। हम किस रास्ते पर चल रहे हैं ये हमारे रोजमर्रा की जिंदगी, हमारे आसपास चलने वाली घटनाओं पर हमारे संस्कार, हमारी संगति इत्यादि पर निर्भर करती है। ऐसा ही कुछ मैंने अपनी जिंदगी में महसूस किया है, देखा है। जिस तरह माता–पिता अपने बच्चों से बहुत सारी उम्मीदें रखते हैं और यह स्वाभाविक भी है हर मां – बाप यही चाहेंगे कि उनके बच्चे कुछ ऐसा करें कि वो उन पर गर्व महसूस कर सकें, बच्चे अपने माता–पिता के नाम से नहीं, माता पिता अपने बच्चों के नाम से जाने जायें। अगर मां – बाप अपने बच्चों से उम्मीद रख सकते है तो बच्चे क्यों नहीं ? अक्सर ऐसा होता है कि हमारा ये समाज जिसके कारण हमारे सपने हमारे आगे बढ़ने की क्षमता पलभर में चूर – चूर हो जाती है। लोग क्या कहेंगे, क्या सोचेंगे, समाज क्या कहेगा, यह दुनिया क्या कहेगी। ये सारी बातें हमें घुटने टेकने पर मजबूर कर देती है। हम ही वो लोग हैं जिसने समाज बनाया है न कि समाज ने हमें। ये जिंदगी हमारी है तो तय भी हम ही करेंगे, कि हमे इसे किस तरह जीना है। क्या ये एक प्रथा है कि हम लोगों के तानों की वजह से उड़ना ही छोड़ दें। ये कब तक चलेगा, क्या कभी कोई व्यक्ति समाज की परवाह किए बिना अपने जिंदगी के मुकाम को हासिल कर पाएगा ? हमारे जीवन में ऐसी बहुत सी कठिन परिस्थितियां आती है जिनकी वजह से हम अपनी मंजिल तक पहुंच नहीं पाते। मेरा कहना यह है कि दुनिया वालों की परवाह न करो अगर तुम खुद में सही हो तो दुनिया वालों से क्या फर्क पड़ता है वो तो कहेंगे ही पर सही समय आने पर उनके मुंह बंद भी हो ही जाएंगे। जब आपको अपनी मंजिल को पाते हुए देखेंगे पर सवाल ये उठता है क्या हमारे घरवाले हमारे माता – पिता हमें समझेंगे ? ऐसा नहीं है कि वो हमें गलत राह दिखाएंगे। वो हमें हमेशा, हर मोड़ पर सही राह दिखाते हैं पर कभी–कभी ऐसा होता है जिस वक्त हमें उनकी बातें समझ नहीं आती है, तो हम नहीं समझते और हम गलत राह पर चलने लगते हैं। हर इंसान यही चाहता है कि वो बिना मेहनत किए अपनी मंजिल तक पहुंच सके पर ऐसा नहीं होता। जिस प्रकार एक छात्र अपने शिक्षा द्वारा परीक्षा में पास होकर अगली कक्षा में जाता है उसी तरह हमारे जिंदगी में भी बहुत से ऐसे कठिन पड़ाव आते हैं जिन्हें हमें पार करनी होती है और इसके बाद ही हम अपनी मंजिल तक पहुंच पाते हैं इसी तरह मैंने भी अपनी बीती हुई जिंदगी से कुछ सच जाने जो मुझे समय रहते ही पता चल जाना था। हर इंसान एक जैसा नहीं होता सबकी इच्छाएं अलग – अलग होती है, सपने होते हैं, मेरी भी थी। मेरे पिता चाहते थे कि मैं पढ़ लिखकर डॉक्टर या इंजीनियर बनूं और मेरी इच्छा थी कि मैं एक गायिका बनूं। मुझे संगीत में अधिक रूचि थी और इस कारण में पढ़ाई पर ज्यादा ध्यान नहीं देती थी, मैं उस वक्त पिताजी को नहीं समझ सकी कि उन्होंने मुझे संगीत के क्षेत्र में जाने से क्यों मना किया। मेरी पढ़ाई के प्रति लापरवाही को देखकर पिताजी ने मुझे ट्यूशन कराया उस समय मैं दसवीं में थी। धीरे–धीरे मुझे लगने लगा कि मैं इस वर्ष अच्छे अंको से पास हो जाऊंगी। फैल होने का सवाल पैदा ही नहीं होता इस प्रकार से मुझे घमंड हो गया, मेरे मन में अहंकार पैदा हो गया। अहंकार इंसान का सदैव अहित करता है और ऐसा ही हुआ। मेरे दसवीं की परीक्षा के परिणाम बहुत ही बुरे थे। परिणाम मिलने पर पिताजी ने खूब डांटा 1 महीने तक वह मुझसे बात नहीं किए। फिर बाद में समझाया, मेरी हार में उन्होंने मुझे मेरी जीत दिखाई, उन्होंने कहा – गिरे हो तो उठना भी सीखो, हारे हो तो जितना भी सीखो और जो खोया है उसके लिए पछताना क्यों जो पाना है उसके लिए चिंता क्यों। मेरे अंदर एक जुनून था गायिका बनने का मेरा हौसला बुलंद था पर न ही पिताजी ने मुझे समझा ना ही मैंने उन्हें। बहुत सी ऐसी घटनाएं घटी जिससे मैं बहुत कुछ सीखती गई पर मेरे मन में मेरे पिताजी के लिए कड़वाहट भर गई थी। इस तरह मैंने 12वीं तक अपनी पढ़ाई पूरी कर ली पर मैं अपनी मंजिल के रास्ते पर नहीं चल सकी। धीरे धीरे मैं समझने लगी की पिताजी ने सही कहा था पर मैं उन्हें नहीं समझ सकी। इससे मुझे एक बात पता चली कि, माता–पिता और बच्चों के बीच एक गुरु और एक सखा के समान रिश्ता होना चाहिए जिससे वो एक दूसरे को समझ सके। जिसकी जिंदगी में उतार चढ़ाव ही न हो वो जिंदगी ही क्या ? मां–बाप कभी हमें गलत रास्ते पर चलना नहीं सिखाते पर उस वक्त मैंने उन्हें समझा ही नहीं।

जिंदगी तू कैसा है, बिल्कुल सपनों जैसा है।
जिंदगी तू रुलाता है, फिर भी तू हंसाता है
जिंदगी की परिभाषा है, सपनों की अभिलाषा है।
तुम्हें गिराता है, फिर क्यों उठाता है।
जिंदगी तू कैसा है, बिल्कुल सपनों जैसा है।

टिकेश्वरी यादव (बी.एससी. प्रथम वर्ष)

मेरे महाविद्यालय का प्रथम वर्ष का अनुभव

जब कोई 12 वीं उत्तीर्ण करने के पश्चात कॉलेज की ओर झांकता है उसी प्रकार मैंने भी कॉलेज में दाखिला लिया। यह मेरे लिए बिल्कुल नया और चुनौतियों से भरा हुआ था। यहां मुझे जानने वाला कोई नहीं था। कॉलेज जीवन मेरे लिए कई अपरिचित चेहरों को सामने लाकर रख दिया था। यहां मुझे अपने अंदर झांकने की जरूरत थी। मेरे विचारों को सामाजिक बनाने की जरूरत थी। मैंने अपने स्वतंत्र इच्छा के साथ अपने आत्मविश्वास को बढ़ाया।

कॉलेज जीवन हमें स्वतंत्र होना सिखाता है यह हमें मजबूत बनाता है और हमें अपनी लड़ाई खुद लड़ना भी सिखाता है। यह हमें अपने करियर के बारे में भी गंभीर बनाता है। हम ऐसे निर्णय लेते हैं जो हमारे भविष्य को अपने आप से प्रभावित करते हैं, जैसा कि स्कूली जीवन में हमारे माता पिता ने हमारे लिए किया है।

मैंने भी अपने जीवन में कुछ उद्देश्यों के साथ कॉलेज में दाखिला लिया और हर चीज में आगे रहने का ठान लिया था ताकि मेरा मनोबल और मजबूत हो सके और मेरे जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करने में मेरी आत्मविश्वास को बढ़ाएगा। इस कारण मैं कक्षा में पढ़ाई के क्षेत्र में सक्रिय रहा। अतः मुझे इसका परिणाम स्वरूप पूरे गणित समूह में से एक विज्ञान क्लब का मेंबर बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इसके पश्चात हमारे महाविद्यालय में तरह–तरह की प्रतियोगिताएं कराई गई। जिसमें प्रमुख –**निबंध लेखन**, **क्विज प्रतियोगिता**, **पोस्टर मेकिंग** प्रतियोगिता (**कोरोना के रोकथाम पर**) एवं **मॉडल प्रेजेंटेशन** कराया गया जिसमें हमने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया और हमारे पांच मित्रों ने मिलकर एक **अर्थ क्विक अलार्म** का मॉडल पेश किया जिसमें हमने प्रथम स्थान प्राप्त किया हमें बहुत खुशी हुई कि हमारी मेहनत का फल मिल गया। इन सभी प्रतियोगिताओं के खत्म होने के बाद मेरे कई सारे नए मित्र भी बन चुके थे। स्कूल में जहां एक छोटा सा दोस्तों का ग्रुप होता है वही कॉलेज में अचानक दोस्तों का ग्रुप खूब बड़ा हो जाता है। यही नहीं अलग–अलग जिलों से आए स्टूडेंट भी हमारे फ्रेंड लिस्ट में शामिल हो जाते हैं। इन्हीं दोस्तों की वजह से प्रतिदिन कॉलेज आना और पढ़ाई लिखाई की सारी बातें एवं चर्चा करना होता है और बहुत सारी मुसीबतों का हल दोस्तों से ही मिल जाता है इसलिए सोच समझकर दोस्ती करनी चाहिए।

हमारी पढ़ाई–लिखाई हो ही रही थी कि कोरोना के केस भारत में बढ़ने लगे जिसके कारण छत्तीसगढ़ सरकार ने कॉलेज के ऑफलाइन पढ़ाई को बंद करने के दिशा निर्देश जारी किये एवं ऑनलाइन मोड में पढ़ाई को जारी करने का आदेश मिला और इसके पश्चात हमारे पाठ्यक्रम ऑनलाइन माध्यम से पूर्ण कराया गया एवं 17 जुलाई 2021 से 5 अगस्त 2021 तक ऑनलाइन परीक्षा लिया गया जिसमें मुझे पूर्ण विश्वास था कि मैं अच्छे अंको के साथ मैं उत्तीर्ण हुआ।

कॉलेज जीवन का अनुभव वास्तव में एक खूबसूरत अनुभव होता है। इसी समय हम निर्णय लेते हैं कि अपने जीवन में क्या करेंगे और हमें कॉलेज पहुंचते तक कोई लक्ष्य जरूर बना लेना चाहिए एवं कुछ अच्छे आदतों को भी अपना लेना चाहिए। जैसे सुबह जल्दी उठना, अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रतिदिन पढ़ाई करना एवं डायरी लेखन अवश्य करना चाहिए। कॉलेज लाईफ हमें बहुत कुछ सिखाती है और हमारे भविष्य में नई – नई चुनौतियां और संघर्षों का निर्माण करती है। केवल अध्ययन पर ध्यान केंद्रित करने के बजाए, एक व्यक्ति को अनेक गतिविधियों में भी भाग लेना चाहिए और अपने कॉलेज के जीवन में जितना संभव हो उतना समूहीकरण करना चाहिए क्योंकि ये सभी चीजें व्यक्ति के समग्र विकास मैं मदद करती है।

जीवन में हर बार नई चुनौतियां को आना ही होगा,
यह जिंदगी का अखाड़ा है यहां खुद से लड़ना भी होगा।
संघर्ष तो जीवन में हर एक को करना ही होगा।

एक सफल इंसान बनना इतना भी आसान नहीं,
कई मुश्किल परिस्थितियों से गुजरना भी होगा।
संघर्ष तो जीवन में हर एक को करना ही होगा।

नीलेश तिर्की

(बी.एससी. प्रथम वर्ष)

जीवन में समय का महत्व

समय का महत्व – समय कभी भी किसी के लिए नहीं रुकता इसलिए सही समय पर अपना कार्य करना जरूरी है। समय का महत्व जो इंसान सीख गया, वह जिंदगी में जरूर सफलता प्राप्त करता है। समय बहुत महत्वपूर्ण है, इसलिए हम सभी को अपना काम समय पर करना चाहिए। समय बहुत मूल्यवान होता है, इसलिए हम सभी को समय का सदुपयोग करना चाहिए।समय का महत्व उस विद्यार्थी से पूछ सकते हैं जो परीक्षा में फेल होने के कारण 1 साल पीछे रह गया हो। हमारे प्रतिदिन के जीवन में अनेक ऐसे घटनाक्रम होते हैं जो हमें समय की महत्ता का पाठ पढ़ा जाते हैं। यह सच है कि सभी का समय हमेशा एक समान नहीं होता यदि आज होठों पर हंसी है तो कल आंखों में आंसू भी हो सकता है। इस जीवन में समय का महत्व सबके लिए समान है इसलिए जब लगे कि परिस्थितियां कमजोर है तो उसका पूरे आत्मविश्वास के साथ सामना करना चाहिए ताकि आने वाली बड़ी से बड़ी मुसीबतों को आसानी से पार किया जा सके। समय अच्छा हो या बुरा मनुष्य को अपने जीवन में पूरे उत्साह एवं उमंग के साथ जीना चाहिए। जीवन की सार्थकता समय के सदुपयोग के द्वारा ही होता है। जीवन में समय के छोटे से हिस्से **सेकंड** का महत्व – जीवन में बड़े – बड़े लक्ष्य सभी रखते हैं और उन्हें पूरा करने हेतु अनेक योजनाओं का निर्माण भी करते हैं, योजनाओं का सफल होने के लिए कठिन परिश्रम भी करते हैं। जीवन में सफल होने के लिए महीनों सालों की योजनाएं तैयार की जाती है, परंतु इसमें सोचने वाली बात यह है कि अगर कोई महल बनाने की योजना बनाता है, तो क्या उसे बनाने में कोई सार्थकता नहीं दिखाई देती? देती है तभी तो योजना सफल होती है।हम एक एक ईट को सजगता से देखभाल कर लगाते हैं क्योंकि इसी एक ईंट के ऊपर पता नहीं कितनी हजारों ईटों के वजन को संभालने की जिम्मेदारी भी होगी। इसी प्रकार कहीं हम अपना जीवन रूपी महत्व बनाने में केवल एक दीवार की महत्ता से ऊपर तो नहीं रख रहे हैं।

समय का महत्व –

समय खरीदा नहीं जा सकता है –समय एक ऐसा सच है जिसे जीवन में कभी भी किसी भी कीमत में खरीदा नहीं जा सकता है। हम कहते हैं कि अगर पैसे हैं, ताकत हैं, तो सब संभव। परंतु चाहे आपके पास कितने भी पैसे हो या आप कहीं के राजा ही क्यों न हो आप समय को खरीद नहीं सकते हो। यहीं से हम ये अनुमान लगा सकते हैं कि समय कितना बलवान होता है।

समय का सदुपयोग ही समय को खरीदने के समान – हां ये आवश्यक है कि हम समय रहते अगर समय का महत्व समझ जाते हैं और समय का सदुपयोग कर लेते हैं तो उसे हम समय को खरीदने जैसा समझ सकते हैं। अगर कोई विद्यार्थी समय रहते मन लगाकर अच्छी शिक्षा ग्रहण कर लेता है। तो समय हमेशा उसे खुशी प्रदान करता है। वहीं अगर विद्यार्थी अपनी लापरवाही के कारण समय बर्बाद करता रहता है तो यह निश्चित ही है कि भविष्य में उसे अनेक कष्ट मिलना तय है। अतः समय का सदुपयोग करना बहुत जरूरी है।

कैसे करें समय का सदुपयोग – आज या भविष्य में जो कर्तव्य आपका है उसे आप अच्छे से पूर्ण करें। अगर आप एक विद्यार्थी हैं तो अच्छे से शिक्षा ग्रहण करें। अगर आप कहीं जॉब करते हैं तो आप ईमानदारी और मेहनत से समय का सदुपयोग करते हुए काम करेंगे, तभी भविष्य में अच्छे पद पर प्रमोशन के अवसर मिलेंगे।

व्यक्तित्व विकास करते रहें – भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के लिए आज ही खुद को तैयार करें। इसके लिए मेहनत करके अपने व्यक्तित्व में कुछ नया जोड़ते रहे। आप जो हैं कल उससे एक कदम ही आगे सही, पर आगे खड़े होने चाहिए। अगर आप 6 महीने पहले जहां थे और आज भी वही हैं जैसे– कौशल में, ज्ञान में, जागरूकता में आदि, तो आपने यह 6 महीनों का सही से सदुपयोग नहीं किया है।

अनावश्यक घूमने, बड़बोलेपन में समय बर्बाद ना करें – जो व्यक्ति समय के महत्व को समझता है। वह व्यक्ति बिना किसी मतलब के इधर–उधर टहलता नजर नहीं आएगा। अनेक ऐसे लोग नजर आ जाएंगे जो पत्ते खेलने में घंटों व्यतीत कर देते हैं या कहे कि समय बर्बाद कर देते हैं। वो आने वाले समय का सदुपयोग न करके दुरुपयोग कर रहे होते हैं। अतः अनावश्यक इधर से उधर घूमने में समय बर्बाद ना करें। समय के महत्व को समझें।

पहले खुद के लिए कुछ कर लो, फिर दूसरों के लिए करना – जीवन में अनेक ऐसे व्यक्ति है जो किसी दोस्त के कहने पर कहीं भी चलने को तैयार रहते हैं। चाहे उनका दोस्त अनावश्यक ऐसे ही कहीं घूमने जा रहा हो। अनेक लोग ऐसे भी हैं जो अपने काम की महत्ता को समझे बिना हर समय किसी न किसी के साथ चलने या उनके काम के लिए तैयार रहते हैं। वो भी अपने समय के महत्व को नहीं समझते हैं। जो अभी हो सकता है वो बाद में न हो – अनेक ऐसे परीक्षा होते हैं जिनमें समय सीमा का निर्धारण होता है। मतलब जिसमें उम्र की सीमा होती है। अतः विद्यार्थियों को आवश्यक है कि अपने विद्यार्थी जीवन में जो आवश्यक है वही किया जाए, फालतू के कार्यों में समय बर्बाद ना किया जाए।

अगर आपकी उम्र, परीक्षा के ऊपरी समय सीमा को पार कर जाती है और आप उसमें सही से अपना शत–प्रतिशत नहीं दे पाते हैं तो आपको पछतावा होता है।

पद्मिनी चक्रवर्ती (बी.एससी अंतिम वर्ष)

ऑनलाइन शिक्षा

शिक्षा हमारे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण अंग है और इसके बारे में आप उनसे ही जान सकते हैं जिसने किसी कारणवश शिक्षा ग्रहण नहीं किया हो या शिक्षा ग्रहण करने से वंचित रह गए हैं। परंतु आज के आधुनिक युग में शिक्षा ने एक नया आयाम प्राप्त कर लिया है।

आज शिक्षा प्राप्त करने का इतना आसान तरीका है कि आपको शिक्षा लेने के लिए कहीं बाहर जाने की जरूरत नहीं पड़ती। शिक्षा लेने के लिए बस घर बैठे ही आप शिक्षक से शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं और इस शिक्षा का नाम **ऑनलाइन शिक्षा** है। आजकल के समय में इंटरनेट जैसी सुविधा सभी घरों में उपलब्ध रहती है। कोरोना काल के समय में ऑनलाइन शिक्षा बहुत ही कारगर सिद्ध हो रही है। आजकल हर जगह चाहे गांव हो या शहर ऑनलाइन शिक्षा बहुत प्रचलित हो रही है देश हो या विदेश ऑनलाइन शिक्षा से आप कहीं भी किसी भी समय जुड़ सकते हैं । आज विद्यार्थियों के लिए ऑनलाइन शिक्षा बहुत ही लाभप्रद सिद्ध हो रही है।

ऑनलाईन शिक्षा का प्रभाव – महामारी ने दुनिया भर में शिक्षा और शैक्षिक प्रणालियों को अत्यधिक प्रभावित किया है। कोरोना के प्रभाव को कम करने की कोशिश में दुनिया भर की शिक्षण संस्थानों को अस्थाई रूप से बंद कर दिया गया। 1.077 बिलियन शिक्षार्थी स्कूल बंद होने के कारण प्रभावित हुए हैं। अब सबसे बड़ा सवाल उठता है कि शिक्षार्थी शिक्षा कैसे ग्रहण करें। इसके लिए कई बड़ी संस्थाओं ने इसका एक ही हल निकाला वो है ऑनलाइन शिक्षा। जिसका असर हर जगह देखा जा सकता है।

ऑनलाइन शिक्षा के लाभ – जैसा कि हम में से कई लोग जानते हैं कि ई – लर्निंग डिस्टेंस शिक्षा का एक रूप है। जहां शिक्षक दूर बैठे, चाहे वो घर में हो या घर के बाहर कहीं से भी अपने विद्यार्थी को शिक्षा प्रदान कर सकते हैं। इसके द्वारा शिक्षक और विद्यार्थी अपने विचारों को आदान प्रदान कर रहे हैं, जो कि शिक्षा को प्राप्त करने का अच्छा जरिया है।

ऑनलाइन शिक्षा के कई लाभ भी हैं, जो इस प्रकार हैं –

टेक्नोलॉजी से शिक्षा में बदलाव – बदलते परिवेश में टेक्नोलॉजी में भी कई बदलाव हुए हैं और इसके उपयोग भी बढ़े हैं। टेक्नोलॉजी के वजह से शिक्षा लेने की पद्धति में भी बहुत से परिवर्तन देखने को मिले हैं। आज ऑनलाइन शिक्षा में उपयोग होने वाली शिक्षण संबंधित सामग्री, टेक्नोलॉजी से ऑनलाइन ही एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजी जा सकती हैं।

ऑनलाइन शिक्षा के नुकसान – ऑनलाइन शिक्षा के जहां बहुत से लाभ हैं वही इसके नुकसान भी हैं। जो कि शारीरिक से लेकर मानसिक रूप में भी सही नहीं दिखाई पड़ते हैं। उन्हीं में से कुछ हनिया इस प्रकार हैं।

ऑनलाइन शिक्षा में ध्यान की कमी – जब कोई विद्यार्थी स्कूल में जाकर अपनी पढ़ाई पर सही तरह से ध्यान नहीं दे पाता, तो ऑनलाइन शिक्षा में कहां ध्यान दे पाएगा। उसमें वो डर नहीं रहता जो कि स्कूल में पढ़ाई करते वक्त विद्यार्थी में रहता है। ऑनलाइन शिक्षा में विद्यार्थी कई तरह के बहाने बनाकर बीच में ही अध्ययन छोड़ देता है, जोकि गलत है।

प्रियंका महेश्वरी
बी.एससी (प्रथम वर्ष)

एक कविता हर मां के नाम

घुटनों से रेंगते – रेंगते,
कब पैरों पर खड़ा हुआ।
तेरी ममता की छांव में ,
जाने कब बड़ा हुआ।

काला टीका दूध मलाई, आज भी सब कुछ वैसा है।
मैं ही मैं हूं हर जगह, प्यार यह तेरा कैसा है।
सीधा – साधा भोला – भाला, मैं ही सबसे अच्छा हूं।
कितना भी हो जाऊं बड़ा मां ,मैं आज भी तेरा बच्चा हूं।

डोलेश्वरी यादव
बी.एससी. (तृतीय वर्ष)

बेटियां

तन पर हल्दी, हाथों में मेहंदी, पांव में महावर रचाए विदा हो जाती है,
अजी बेटियां ना जाने कब पराई हो जाती है।
चावल उछाले, बिना पीछे देखे विदा हो जाती है,
अजी बेटियां ना जाने कब पराई हो जाती है।

अपने नाम की लिखी किताबें, दीवारों पर तस्वीर छोड़ जाती है,
अजी बेटियां ना जाने कब पराई हो जाती है।
सारे घर को सर पर उठा लेने वाली वो राजकुमारी,
शादी के बाद मेहमान बन कर आती है,
अजी बेटियां ना जाने कब पराई हो जाती है।

मायके में हजारों फरमाइश करने वाली,
ससुराल में ना जाने क्यों संकुचित रह जाती है,
अजी बेटियां ना जाने कब पराई हो जाती है।
भूख लगने पर मां मां का शोर मचाने वाली,
ससुराल में ना जाने कैसे सारे व्रत उठाती है,
अजी बेटियां ना जाने कब पराई हो जाती हैं।

मायके में जरा सी चोट लगने पर जोर – जोर से चिल्लाती हैं,
ससुराल में ना जाने वह कैसे तकलीफ झेल चुपचाप रह जाती है।
अजी बेटियां ना जाने कब पराई हो जाती हैं। ।

मंजू पटेल
एम.एससी. (रसायन प्रथम सेमेस्टर)

Entire class fail

समाचार पत्रों के पुराने पन्नों को पलटते हुए मुझे यह लेख मिला और सोचा कि यह कितना सही है।
प्रोफेसर ने किया पूरी क्लास को फेल। बात अगस्त 2020 की है, स्थान का ज्ञान नहीं, क्योंकि इसका जिक्र समाचार पत्र में नहीं था।

अर्थशास्त्र के प्रोफेसर जो स्थानीय महाविद्यालय में कार्यरत हैं उन्होंने पूरी क्लास को फेल कर दिया। इससे पहले उन्होंने किसी भी छात्र को फेल नहीं किया था। जिस कक्षा के विद्यार्थियों को उन्होंने फेल किया, उनका मानना था कि समाजवाद स्थापित करने से अच्छा होता ना कोई अमीर होता, ना गरीब सभी सुखी रहते और यह एक क्रांतिकारी फैसला होता।

प्रोफेसर ने बच्चों की बात को माना और कहा ठीक है, चलो इस बात पर एक प्रयोग करते हैं। अब से कक्षा में जितनी भी परीक्षाएं होगी उसमें परिणाम औसत के अनुसार दिया जाएगा ना ही कोई फेल होगा और ना ही किसी को उच्चतम ग्रेड – A मिलेगा।

पहली परीक्षा के पश्चात जब सब के परिणामों का औसत निकाला गया तो सभी को B – ग्रेड प्राप्त हुआ। जिन बच्चों ने ज्यादा मेहनत की थी वह उदास थे और जिन्होंने कम मेहनत की थी वे खुश थे। इसी के आधार पर जब दूसरी परीक्षा हुई तो जिन बच्चों ने अधिक मेहनत की थी उन्होंने कम मेहनत की, व जिन बच्चों ने कम मेहनत की थी उन्होंने उससे भी कम मेहनत की।

दूसरे परीक्षा के परिणाम का औसत ग्रेड – D रहा। इस परिणाम से कोई भी खुश नहीं था। जब तीसरी परीक्षा ली गई तो औसत F – ग्रेड रहा। और जैसे–जैसे परीक्षाएं लेते गए परिणाम में गिरावट आती गई। कोई भी बच्चा दूसरे के फायदे के लिए पढ़ना नहीं चाहता था । जैसे ही मुख्य परीक्षा ली गई आश्चर्यजनक रूप से सभी बच्चे फेल हो गए।

तब प्रोफेसर ने कहा कि समाजवाद हमारे जीवन में लाया गया तो यह सबसे बड़ा गलत फैसला होगा। क्योंकि जब पुरस्कार बहुत अच्छा होता है तो प्रयास भी शानदार होता है, लेकिन जब सरकार सारे पुरस्कार हटा देगी तो कोई भी सफल होने के लिए प्रयास नहीं करेगा।

इस आधार पर ये संभवतः चार सर्वश्रेष्ठ वाक्य है जिन्हें सभी ने कभी पढ़ा है और सभी इस प्रयोग पर लागू होते हैं।
१. अमीरों को समृद्धि से बाहर कानून बनाकर गरीबों को समृद्धि में नहीं ला सकते हैं।
२. जब एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के लिए काम किए बिना शोध करता है तो उसे बिना देखे ही काम करना चाहिए।
३. धन को विभाजित करके धन नहीं बढ़ा सकते हैं।
४. सरकार किसी भी व्यक्ति को कुछ नहीं दे सकती, जब तक वह किसी और से नहीं ले लेती।

चितरंजन गुप्ता
एम.एससी (रसायन प्रथम सेमेस्टर)

जिंदगी

रंगों से रंगीन है जिंदगी,
अगर खुल के जियो तो हसीन है जिंदगी।
कुछ खट्टी – मीठी सी तकरार, जैसे कड़वे करेले संग मिश्री का हो वास।
कहीं धूप तो कहीं है छाया, किसी ने कमाई दौलत, तो किसी ने कमाया दुआओं का खजाना।
जीवन का बस इतना सा है सार, बनो मत किसी के आँखों का आंसू,
कोशिश बस इतनी करो, कि सजा सको सबके होठों पर मुस्कान।
कोई रूठे ना हमसे, कोशिश बस यही करो,
जिंदगी में ऐसा करना कि जब ना रहे, तब सब हमारी बातें करें।
और जहां जाएं सब हमारा इंतजार करें।
बस यही है जिंदगी
इतनी ही है जिंदगी।

वैजन्ती यादव
बी.एससी. (तृतीय वर्ष बायो)

शिक्षक हमारे मार्गदर्शक

मेरे उद्धारक को मेरा प्रणाम
शिक्षक हमारे मार्गदर्शक
१. शिक्षक वह होता है जो अपनी ज्ञान की ज्योति से हमें प्रकाशित करते हैं, और हमारा मार्गदर्शन करते हैं।
२. मां किसी भी व्यक्ति की पहली शिक्षक होती है, जो उसे बोलना – चलना सिखाती है।
३. शिक्षक सभी के जीवन को बनाने में निस्वार्थ भाव से सेवा देते हैं।
४. शिक्षक हमें जीवन के प्रति सकारात्मक नजरिया अपनाना सिखाते हैं।
५ .शिक्षक के पेशे को सबसे अच्छे और आदर्श पेशे के रूप में माना जाता है।

कल्पना राठिया
बी.एससी. (तृतीय वर्ष बायो)

सुविचार

- कोशिश आखिरी सांस तक करनी चाहिए, या तो 'लक्ष्य' हासिल होगा या 'अनुभव' दोनों ही नायाब होते हैं।
- एक ऐसा लक्ष्य निर्धारित करें जो सुबह आपको बिस्तर से उठने पर मजबूर कर दे।
- यदि कड़ी मेहनत आपका हथियार है तो सफलता आपके गुलाम हो जाएगी।
- माना ऊपर चढ़ना कठिन होता है, लेकिन ऊपर से नजारा भी अलग होता है।
- तु बेशक हीरा है ...! लेकिन सामने वाला तेरी कीमत ,अपनी औकात, अपनी जानकारी और अपनी हैसियत से लगाएगा।

राहुल दास
बी.एससी. (अंतिम वर्ष गणित)

प्रेरक कथन

- सफलता के लिए आत्मविश्वास आवश्यक है,
  और आत्मविश्वास के लिए तैयारी।
- मूल्य रहित शिक्षा,
  मनुष्य को एक चतुर शैतान बनाती है।
- यू जमीन पर बैठकर,
  क्यों आसमान देखता है,
  पंखों को खोल ज़माना सिर्फ उड़ान देखता है।
- जब तक आप खुद पर विश्वास नहीं करते,
  तब तक आप भगवान पर विश्वास नहीं कर सकते।

पायल गंधर्व (बी.एससी. प्रथम वर्ष गणित)

चहकती चंचल सी मन काया

चहकती चंचल सी मन काया,
देख उसे है सबका मन भाया।
कभी उछलते कूदते आयी,
मां – पा कहकर मन को भायी।

घर में करे वो काम सारे,
समय का पता हो उसे हमारे।
धीमी – धीमी उम्र बढ़े हैं,
तब – तब उज्जवल भविष्य की कामना किये हैं।

घर की थी वो लाडली रानी,
छात्रावास को जब हुई रवानी।
झर – झर बहे हैं आंसू उसके,
याद आये जब घर की कहानी।

प्रातः काल को वह उठकर,
एक सपना लिए आंखों में सजाये,
पढ़ – लिख कर अफसर बन जाये,
आगे बढ़े और रागिनी गाये।

धीरे – धीरे सबके मन को भायी,
और आज उसने एक कविता सुनायी।
चहकती चंचल सी मन काया,
देख उसे है सबका मन भाया।।

धनेश्वरी साहू
एम. एससी. (प्रथम सेमेस्टर रसायन)

शिक्षक को समर्पित कविता

शिक्षक की गोद में उत्थान पलता है, जहां सारा शिक्षक के पीछे चलता है।
शिक्षक का बोया बीज पेड़ बनता है, हजारों बीज वही पेड़ जनता है।

काल की गति को शिक्षक मोड़ सकता है,
शिक्षक धरा से अंबर को जोड़ सकता है।
शिक्षक की महिमा महान होती है,
शिक्षक बिन अधूरी वसुंधरा रहती है।

याद रखो चाणक्य ने इतिहास बना डाला था ,
क्रूर मगध राजा को मिट्टी में मिला डाला था।
बालक चंद्रगुप्त को चक्रवर्ती सम्राट बनाया था,
एक शिक्षक ने अपना लोहा मनवाया था।

शिक्षक से अर्जुन और युधिष्ठिर जैसे नाम हैं,
शिक्षक की निंदा करने से दुर्योधन बदनाम है।

शिक्षक की ही दया दृष्टि से बालक राम बन जाते हैं,
शिक्षक की अनदेखी से वह रावण भी कहलाते हैं।
हम सब ने भी शिक्षक बनने का सुअवसर पाया है,
बहुत बड़ी जिम्मेदारी को हमने गले लगाया है।

आओ हम संकल्प करें अपना फर्ज निभाएंगे,
अपने प्यारे भारत को हम जागरूक बनाएंगे।
अपने शिक्षक होने का हर पल अभिमान करेंगे,
इस समाज में हम भी अपना शिक्षा दान करेंगे।

गेमेश्वरी राठिया
बी.एससी. (तृतीय वर्ष बायो)

कविता

अर्थ जब खोने लगे

अर्थ जब खोने लगे,
शब्द भी रोने लगे।
जब वह आदमकद हुए,
सब उन्हे बौने लगे।

जख्म ना देखे गए जब ,
आंसू से धोने लगे।
एक जज्बा था अभी तक ,
आप तो छूने लगे।

कब तलक ये ख्वाब देखूँ ,
वो मेरे होने लगे।
कब कहानी मोड़ ले ले,
आप तो सोने लगे।

अंशु चौहान
(बी.ए.प्रथम वर्ष)

कविता

हमें सपने तो हजारों आते हैं, पर बदकिस्मती मेरी पूरी होने ही नहीं देती।
राहों में कांटे नहीं अंगारे बिछे हैं, चलकर पार करनी है।
मुश्किलें तो लाखों है, मगर किताबों को हथियार बनानी है।
खुशी ने ना कभी दस्तक दी, दुखों का बड़ा घेरा है ।
जकड़ कर रख दिया उसने मुझे, सिर्फ सांसों का पहरा है।।
छांटकर दुखों को एक दिन, नया सवेरा लाना है।
फूलों की तरह मुझे, खुशबू बनकर महकना है।।

पापा

जब बोलना भी ना सीखा था, ना चलना मैंने सीखा था,
फिर भी मेरी, हर एक बात उनको समझ में आती थी।
अपनी जरूरतों को पीछे रखकर ,मेरी जरूरतों को पूरी की।
कड़कती धूप में मेरे लिए, अमृत उन्होंने तलाशा है।
हे परमात्मा आपने पिता नहीं ,
अपने परम रूप को मेरे लिए भेजा है।

- मां थम सी गई है ,दुनिया मेरी।
  हवा का झोंका आकर ,उड़ा ना ले जाए दुनिया मेरी।

- हमें महान सिर्फ अपनी डिग्रियों से नहीं बनना ,न ही पद से , महानता तो अपनी सादगी ,सहजता और सहृदयता होती है।।

रेणुका महंत
बी.एससी. (अंतिम वर्ष बायो)

कहानी
साहसी लड़की

एक समय की बात है जब एक गांव में एक मध्यम वर्ग की एक लड़की रहती थी जिसका नाम डुग्गू था वह करीब 11 साल की थी। एक बार वह अपने परिवार के साथ घूमने के लिए बाहर पूरी गई थी।

तब एक दिन सुबह के समय पूरे परिवार के साथ डुग्गू समुद्र किनारे गई थी सभी ने समुद्र किनारे बहुत मजा किया। पर अचानक डुग्गू के मामा ने कहा डुग्गू वहां थोड़ी दूर पर तुम्हारी नानी बैठी है उसके पास चले जाओ पर डुग्गू को तो नानी दिखाई ही नहीं दे रही थी तो डुग्गू बोली मामा मैं वहां नहीं जाऊंगी नानी मुझे नहीं दिखाई दे रही। पर मामा के जिद करने पर डुग्गू और उसकी मम्मी डुग्गू की नानी के पास जाने लगे । डुग्गू की मम्मी भी ज्यादा पढ़ी लिखी नहीं थी डुग्गू समुद्र के किनारे मरे हुए बड़े – बड़े कछुओं को गिनते गिनते जा रही थी और इस तरह से डुग्गू ने सात कछुए पार कर लिए पर डुग्गू को उसकी नानी नहीं दिखाई दी तो डुग्गू और उसकी मम्मी ने सोचा कि हम वही परिवार के पास वापस चलते हैं वरना हम गुम हो जाएंगे, पर रास्ता तो पता ही नहीं और ना ही यह कि परिवार कहां है फिर डुग्गू ने सोचा कि मम्मी हम इधर आते वक्त 7 कछुए पार करके आए हैं तो हम वापस सात कछुए पार करके चलते हैं ,फिर हम परिवार के पास पहुंच जाएंगे। जब डुग्गू और उसकी मम्मी वहां पहुंचे तो देखा कि सारे परिवार वाले वहां से जा चुके हैं मतलब की डुग्गू और उसकी मम्मी उस अनजान देश में गुम हो चुके थे।

डुग्गू और उसकी मम्मी को ना तो वहां का रास्ता मालूम था, ना ही वहां की भाषा आती थी, और ना ही उन्हें होटल का नाम मालूम था । तो अब क्या करें, कैसे परिवार को ढूंढें ? फिर अचानक डुग्गू को याद आया कि हमारा होटल तो सड़क के उस पार ही है पर कैसे पता करें कि कौन सा होटल है क्योंकि वहां पर तो बहुत सारे होटल दिखने में एक जैसे ही थे। करीब डेढ़ से दो घंटा हो गया उनको गुम हुए, अब डुग्गू को डर लग रहा था रोना भी आ रहा था, पर डुग्गू ने हार नहीं मानी वह कोशिश करती रही । डुग्गू को वहां की भाषा नहीं आती थी पर फिर भी डुग्गू ने बात करने की कोशिश की क्योंकि डुग्गू को अपने मामा का फोन नंबर याद था इसलिए डुग्गू ने कोशिश करके उस व्यक्ति से उसका मोबाइल फोन मांग लिया, पर कॉल करने पर किसी ने भी फोन नहीं उठाया । कई बार फोन लगाने की कोशिश की पर कोई जवाब नहीं मिला क्योंकि सबका फोन तो रूम में था और सभी लोग डुग्गू को और उसकी मम्मी को ढूंढ रहे थे पर डुग्गू के बड़े मामा उनकी मानसिक स्थिति थोड़ी ठीक नहीं थी इसलिए वह होटल के रूम में जो बालकनी थी उस में खड़े होकर नजारे का मजा ले रहे थे।

पर डुग्गू के कई कोशिशों के बाद डुग्गू को उसके बड़े मामा बालकनी में दिखाई दिए। उन्हे देखकर डुग्गू और उसकी मम्मी बहुत खुश हुए और दोनों होटल की तरफ जाने लगे, पर तब ही अचानक डुग्गू और उसकी मम्मी को उनका परिवार मिल गया और वे सभी खुशी–खुशी अपने घर वापस चले गए।

इस छोटी सी कहानी से हमें यह सीख लेनी चाहिए कि जिंदगी में मुश्किलें चाहे कितनी ही छोटी हो या कितनी भी बड़ी हो हार कभी नहीं माननी चाहिए कोशिश हमेशा करते रहना चाहिए मंजिल एक दिन जरूर मिलेगी और जीत तुम्हारी ही होगी।

दीपिका अग्रवाल
बी.एससी. (प्रथम वर्ष गणित)

ROLE OF IQAC IN COLLEGE

IQAC in any institution is a significant administrative body that is **responsible for all quality matters**. It is the prime responsibility of IQAC to initiate, plan and supervise various activities that are necessary to increase the quality of the education imparted in an institution or college.

Objectives of the IQAC

The IQAC of the College is constituted to achieve the following objectives:

- To develop and progress a height and level of clarity and focus in institutional functioning towards creation, sustenance and enhancement of quality and facilitate internalization of the quality culture permeating every sphere of the Institution.
- To facilitate the integration of the various activities of the institution and institutionalize the best practices.
- To provide a sound basis for decision making imbibing all the dimensions of service quality to improve institutional functioning.
- To coordinate and improve internal communication to facilitate greater policy implementation and quality assurance towards its stakeholders.

Functions of the IQAC

- Development and application of quality benchmarks/parameters for the various academic and administrative activities of the College.
- Arrangement for feedback responses from students, parents and other stakeholders on quality-related institutional processes.
- Dissemination of information on the various quality parameters of higher education.
- Organization of inter and intra institutional workshops, seminars on quality related themes and promotion of quality circles.
- Documentation of the various programmes/activities of the College, leading to quality improvement.

Benefits of IQAC

- Best Practices
- Internalization of Quality Culture
- Better Collaboration of Departments
- Proper Documentation
- Project-based & Service-based Learning

Dr. R.K.KURRE (IQAC COORDINATOR)

“Knowledge is power”

Warm greeting to all of you! I am delivered today on the topic called “knowledge is Power’’ I hope everyone relate with and agree with it too. There is no bigger power than the knowledge of power itself. Information, as we all know, its truly liberating. Education lays the foundation of progress in every family and in every society. It empowers the nation and allow its people to rule over time.

If a person is knowledgeable, he will be to turn a situation, event or a person for that matter in his favour. A person's aptitude, talent or capability to perform is completely dependent on this level of understanding education and knowledge. Hence, knowledge is a prerequisite for success.

However, if you think deeply we will realize that knowledge is what makes a person more powerful and not physical strength. It does play an important role, but physical prowess without knowledge is like a blind gaint. who cannot deal with a person with sharp eyes.

So it's up to us how and in what way we make use of of education or the wealth of knowledge whether its for the good of the mankind or for ists destruction.

Thank you!

Vidyadhar Patel
(Dept of English)

LIFE PATH

Don’t think about Aim,
Work for it.
Don’t manipulate your Dream,
Make it true.
Face the loss of Success,
That’s first step.
Keep patience, be Patience
Surely you‘ll Achieve.
Bring Embrace of mind,
You‘re near to Goal.
At last….
The time you Gain as
your “Will”, make sure
To pay Respect…
The Path you begin.

By Anurima K. Lakra
(Dept of English)

रसायन से सीखो

हाईड्रोजन की तरह यूं न आवारा फिरो,
कठिन परिस्थितियों में ऑर्गेनिक सॉल्वेंट की तरह हमेशा डटे रहो।
चमकना ही है तो गोल्ड और सिल्वर की तरह चमको,
और बनना ही है तो नाइट्रस ऑक्साइड बनो,
ताकि तुम खुश रहो और तुमसे जुड़ा हर व्यक्ति खुश रहे।

पूनम चौहान
(रसायन विभाग)

व्यक्तित्व विकास में खेलों की भूमिका

[illegible]

[illegible]

[illegible]

जे.के. भगत

क्रीडा अधिकारी

सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र)

त्यौहार की तरह मनाया गया रासेयो का सात दिवसीय शिविर

जशपुर जिले के पत्थलगांव ब्लॉक के नजदीकी ग्राम पंगसुवा में इस महाविद्यालय का विशेष शिविर **नरवा**, **गरवा**, **घुरुवा** व **बारी** विषय पर दिनांक 12/10/2021 को शिविर का उद्घाटन किया गया जिसके मुख्य अतिथि जिला पंचायत सदस्य श्रीमती बुधियारिन सोनी, विशिष्ट अतिथि श्रीमती अनीता खाखा, जनपद सदस्य श्रीमती करीना नाग, सरपंच, वार्ड पंच चित्रवती एवं गणमान्य व्यक्तियों में श्यामलाल नाग कॉलेज के प्राचार्य श्री डी.के.अम्ब्रेला, महिला अधिकारी सुश्री अनुपमा प्रधान, श्री अभिषेक एक्का, श्री संजय बघेल, लैलूंगा कटकलिया हायर सेकेंडरी से गणित शिक्षक श्री टेकेस कुमार सेठ, बिरिमडेगा से हेमंत शर्मा व भूतपूर्व स्वयं सेवक विशेष रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम का आगाज भूतपूर्व स्वयं सेवक व सांस्कृतिक सचिव डॉ. ईश्वर प्रसाद राठिया के मधुर धुन – "एन. एस. एस. को नहीं भुलूंगा" के धुन से छात्र – छात्राओं के नाचने थिरकने के साथ रंगारंग कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

जिसमें रासेयों के छात्राओं ने छत्तीसगढ़ी पारंपरिक नाचा सुवा, करमा, पंथी मनमोहक नृत्य के प्रस्तुति के माध्यम से भारतीय संस्कृति के धरोहर को जोड़े रखने का संदेश दिये जो कि आज के आधुनिकता के समय में आने वाली पीढ़ियों के लिए दुर्लभ होता जा रहा है जिसे बनाये और संजोये रखने में ऐसे आयोजन निश्चित रूप से कारगर साबित होंगे यह कहा जाए तो गलत नहीं। जिसको देखने तथा जानने गांव के बच्चे, बूढ़े, पुरुषों एवं महिलाओं की काफी संख्या में भीड़ उमड़ी रही।

राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय विशेष शिविर आयोजन जिस थीम पर की गई उसका मुख्य उद्देश्य **छत्तीसगढ़ी भाषा बोली व सरकार के योजना** को जन जन तक पहुंचाकर लोगों को जागरूक करना है।

श्रमदान का अनुपम उदाहरण

सात दिवसीय विशेष शिविर के दौरान रासेयो के स्वयं सेवकों ने श्रमदान का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। उल्लेखनीय है कि जागरूकता और सामाजिक सहभागिता को बढ़ावा देना रासेयो के प्रमुख उद्देश्यों में से एक है। इसके अनुक्रम में शिविरों का आयोजन किया जाता है जिसमें स्वयं सेवकों के द्वारा अभियान चलाकर समाज में व्याप्त भ्रांतियों और कुरीतियों के निवारण का प्रयास किया जाता है। वही परियोजना कार्यों के माध्यम से श्रमदान जैसे मूल्यों को बढ़ावा देने का प्रयास किया जाता है। विशेष शिविर के दौरान स्वयं सेवकों ने जहां सार्वजनिक स्थानों की साफ–सफाई, मैदान का समतलीकरण, शाला परिसर का रंगरोगन और गुलमोहर के वृक्ष के चारों ओर सीमेंट का चबूतरा बनाकर श्रमदान जैसे मूल्यों की पुनर्स्थापना का प्रयास किया, वही कोरोना के टीकाकरण के लिए आम जनमानस में व्याप्त भ्रांतियों को दूर कर लोगों को टीकाकरण के लिए प्रेरित किया। वहीं लोककला पर आधारित सांस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए। जिसके माध्यम से भारतीय संस्कृति की पुरातनता का परिचय देते हुए इसके भीतर छिपे सभी रंगों को संजोए रखने का संदेश भी दिया। ग्रामीणों ने सात दिवसीय शिविर में रासेयों स्वयं सेवकों की भूमिका की जमकर सराहना की है। दीवारों की रंगाई व चबूतरा निर्माण के बाद शाला परिसर की सुंदरता देखते ही बनती है, इसे लेकर ग्रामवासियों ने रासेयो के स्वयंसेवकों, कार्यक्रम अधिकारी श्री टी. आर. पाटले, महिला अधिकारी सुश्री अनुपमा प्रधान की व प्राचार्य श्री डी.के. अंब्रेला की जमकर सराहना की है।

18 बहनें हुई शिविर में शामिल

ठाकुर शोभासिंह शासकीय महाविद्यालय पत्थलगांव द्वारा आयोजित राष्ट्रीय सेवा योजना की सात दिवसीय विशेष शिविर में स्वयं सेवक उत्साह पूर्वक भाग ले रहे हैं। इनमें विकासखंड के अलग–अलग कोने के ग्रामीण क्षेत्र से आए हुए स्वयं सेवक शामिल हुए। वहीं इनमें महिला स्वयं सेवकों की 9 जोड़ी अर्थात 18 सगी बहनों की एक साथ सहभागिता लोगों के बीच चर्चा का विषय बनी हुई है।

मिसाल बनी भूतपूर्व स्वयं सेवकों की पहल

ठाकुर शोभासिंह शासकीय महाविद्यालय पत्थलगांव के रासेयो भूतपूर्व स्वयं सेवकों ने पहल करते हुए आपसी सहयोग से रासेयो के कार्यक्रमों में सहयोग की जिम्मेदारी उठाने का निर्णय लिया है। इसमें शिविर में काम आने वाले साउंड सिस्टम, पंडाल समेत वाहन किराया, ईंधन खर्च अन्य सामग्रियों के लिए आने वाला खर्च भी शामिल है। 2021–22 के शिविर संचालन में सहयोग प्रदान किये।

प्राचार्य व महाविद्यालय स्टाफ की विशेष भूमिका

यह सर्वविदित है कि राष्ट्रीय सेवा योजना का कार्यक्रम प्राचार्य, कार्यक्रम अधिकारी व स्वयं सेवकों की उचित समन्वय से संचालित होती है यदि इसे चित्र द्वारा निरूपित किया जाये तो एक संतुलित त्रिभुज बनती है जिसके एक कोने में प्राचार्य, दूसरे कोने में कार्यक्रम अधिकारी व तीसरे कोने में स्वयं सेवकों को रखकर उनकी महता को समझा जा सकता है। इस मामले में हमारी संस्था सौभाग्यशाली रहा है कि तीनों का बेहतर समन्वय के बदौलत बेहतर परिणाम हासिल कर सके हैं। प्राचार्य महोदय के निर्देशानुसार प्रत्येक दिवस महाविद्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों की उपस्थिति के परिणाम स्वरूप शिविर सफलतापूर्वक संपादित हो सका।

श्री टी. आर. पाटले

[illegible]

विभागाध्यक्ष राजनीति विज्ञान

राजनीति एक सकारात्मक सोच

P - Public administration
O - Organize
L - Liability
I – Ideas
T - Together
I - In
C - Country
S – Sovereignity

जिस तरह सिक्के के दो पहलू होते हैं उसी तरह राजनीति के भी दो पहलू हैं एक सकारात्मक तथा दूसरा नकारात्मक। राजनीति को हमेशा नकारात्मक दृष्टि से देखा जाता है किन्तु राजनीति एक सकारात्मक सोच है जो मानव समाज को एकता के सूत्र में पिरोये रखता है व एक दूसरे के साथ जीवन जीने का दायित्व प्रदान करता है। अतः राजनीति व्यक्ति को एक राष्ट्र में रहने के लिए सम्प्रभुता प्रदान करती है।

राजनीति एक ऐसा विज्ञान है जिसकी सहायता से संपूर्ण मानव समाज का राजनीतिक विकास होता है। राजनीति विज्ञान मानव जीवन में उनके कर्तव्यों एवं अधिकारों से रूबरू कराती है जिससे मानव अपने अधिकारों का उपयोग कर अपने जीवन को सरल बनाता है जिससे मानव जीवन एकता के सूत्र में बंधे रहते है।

यह तभी संभव है जब मानव राजनीति के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाये।

अभिषेक एक्का
[illegible])

गणित और सूझ – बूझ

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] प्रधान
[illegible]

GYMNASIUM
FOLD-N-ROLL

राष्ट्रीय सेवा योजना

शासकीय महाविद्यालय
पत्थलगांव

सात दिवसीय विशेष शिविर

ग्रंथालय

प्रयोगशाला में प्रयोग करते छात्र – छात्राएं

GYMNASIUM

मेहंदी प्रतियोगिता

रंगोली प्रतियोगिता

चित्रकला प्रतियोगिता

अनुपयोगी वस्तुओं से बनाये गए सुंदर कलाकृतियॉं

पाक कला एवं सलाद सज्जा प्रतियोगिता

स्वयंसेवकों ने किया भवन रंग रोगन, पौधरोपण के लिए श्रमदा

18 वहने हुई शिविर में शामिल

स्कूल परिसर के काया कल्प को सुंदर रंग मे रंग दिया शोभा सिंह के छात्राओं ने

जोहार छत्तीसगढ़-पत्थलगांव। आयोजित सात दिवसीय विशेष शिविर का छठा दिवस भी सफल व सार्थक रहा। आज स्वयं सेवको द्वारा प्राथमिक व पर्व माध्यमिक शाला की

शिविर के समापन समारोह पर भारतीय संस्कृति में रंगारंग कार्यक्रम का 3

रंगारंग कार्यक्रम के साथ सात दिवसीय शिविर का समापन

पत्थलगांव(नईदुनिया न्यूज)। राष्ट्रीय सेवा योजना के सात दिवसीय विशेष शिविर के समापन समारोह में भारतीय संस्कृति की विविधता देखने को मिली। अलग-अलग वर्ग और क्षेत्र के स्वयंसेवकों ने आपसी तालमेल और सम्मन्वय से कार्यक्रमों का निष्पादन किया वहीं अलग अलग समुदाय के लोगों ने भी कार्यक्रमों में उपस्थिति देकर इसे सार्थक बनाया। ठाकुर शोभासिंह शासकीय महाविद्यालय की रासेयो ईकाई द्वारा प्राचार्य प्रो अम्ब्रेला और कार्यक्रम अधिकारी प्रो टी आर पटले के मार्गदर्शन में ग्राम पंगसुआ में सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन किया गया था। शिविर के समापन पर यहां समारोह का आयोजन किया गया जिसमें स्वयंसेवकों के साथ ही ग्रामीणों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया। समापन समारोह में स्वयंसेवकों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए। इस दौरान प्रस्तुत हास्य नाटिका 'हड़बड़ी में गड़बड़ी' ने जहां लोगों को हंसाया वहीं लोगों को जीवन में सोच विचार कर कदम बढ़ाने की नसीहत भी दी। इस मौके पर सतनाम धर्म के प्रवर्तक गुरू घासीदास की जयंती भी धूमधाम से मनाई गई। स्वयंसेवकों द्वारा शिविर में ही केक काटकर बाबा घासीदास का सामूहिक तौर पर जन्मदिवस मनाया गया। यहां स्वयंसेवकों ने पंथी लोकनृत्य का भी प्रदर्शन किया। उल्लेखनीय है कि पंथी लोक नृत्य सतनाम समाज की पहचान माना जाता है। गुरू घासीदास की जयंती के मौके पर लोगों की भारी भीड़ के बीच पंथी नृत्य की छटा ने लोगों का उत्साह दूना कर दिया। पूरा परिसर बाबा के जयकारों से गूंज उठा। इस दौरान प्रस्तोताओं बाबा के संदेशों से भी लोगों को अवगत कराते हुए उनके बताए रास्ते पर चलने की नसीहत भी दी। यहां उपस्थित जनसमुदाय के बीच समाज के अलग-अलग वर्गों की एक साथ उपस्थिति से बाबा का सुविख्यात संदेश मनखे मनखे एक समान भी चरितार्थ होता हुआ दिखाई दिया। दूसरी ओर यहां प्रस्तुत अन्य लोक संगीत व लोक नृत्य की प्रस्तुतियों में भारतीय संस्कृति की विविधता के दर्शन हुए। कार्यक्रमों ने लोगों को देर तक अपनी जगह पर बांधे रखा। श्रोता मंत्रमुग्ध कार्यक्रमों का आनंद उठाते रहे।

सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुती देती छात्राएं ● नईदुनिया

श्रमदान का अनूठा उदाहरण

सात दिवसीय विशेष शिविर के दौरान रासेयो के स्वयंसेवकों ने श्रमदान का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। उल्लेखनीय है कि जागरूकता और सामाजिक सहभागिता को बढ़ावा देना रासेयो के प्रमुख उद्देश्यों में से एक है। इसके अनुक्रम में शिविरों का आयोजन किया जाता है जिसमें स्वयंसेवकों के द्वारा अभियान चलाकर समाज में व्याप्त भ्रांतियों और कुरीतियों के निवारण का प्रयास किया जाता है वहीं परियोजना कार्यों के माध्यम से श्रमदान जैसे मूल्यों को बढ़ावा देने का प्रयास किया जाता है। विशेष शिविर के दौरान स्वयंसेवकों ने जहां सार्वजनिक स्थानों की साफ-सफाई, मैदान का समतलीकरण, शाला परिसर का रंगरोगन और गुलमोहर के वृक्ष के चारों और सीमेंट का चबूतरा बनाकर श्रमदान जैसे मूल्यों की पुनर्स्थापना का प्रयास किया वहीं कोरोना के टीकाकरण के लिए आम जनमानस में व्याप्त भ्रांतियों को दूर कर लोगों को इसके लिए प्रेरित किया। वहीं लोक कलाओं पर आधारित संस्कृतिक कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए जिसके माध्यम भारतीय संस्कृति की पुरातनता परिचय देते हुए इसके भीतर छिपे सभी रंगों को संजोए रखने का संदेश भी दिया। ग्रामीणों ने सात दिवसीय शिविर में रासेयो स्वयंसेवकों की भूमिका की जमकर सराहना की है।

राष्ट्रीय सेवा योजना — सात दिन के विशेष शिविर में उत्साहपूर्वक शामिल हुए स्वयं सेवक

स्वास्थ्य केन्द्र और आंगनबाड़ी केंद्र में चलाया स्वच्छता अभियान

त्योहार की तरह मनाया गया रासेयो का सात दिवसीय शिविर

जोहार छत्तीसगढ़-पत्थलगांव।

पत्थलगांव में राष्ट्रीय गणित दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया गया

दबंग रिपोर्टर » पत्थलगांव

ठाकुर शोभा सिंह शासकीय महाविद्यालय पत्थलगांव में राष्ट्रीय गणित दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम का आयोजन किया

ठाकुर शोभा सिंह शासकीय महाविद्यालय पत्थलगांव में तिमाही परीक्षा का सफल आयोजन

ठाकुर शोभा सिंह महाविद्यालय का रासेयो के अंतर्गत स्वच्छता कार्यक्रम

जोहार छत्तीसगढ़–पत्थलगांव।

आज राष्ट्रीय सेवा योजना ठाकुर शोभा सिंह शासकीय महाविद्यालय पत्थलगांव द्वारा कार्यक्रम अधिकारी टीआर पाटले के मार्गदर्शन में गोदग्राम पतरापाली में एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। गोदग्राम पहुंचकर स्वयं सेवकों द्वारा बरगद चौक की साफ-सफाई व उगे हुए खरपतवारों को फावड़ा से छिलाई कर स्वच्छता का संदेश दिया गया। स्वच्छता कार्यक्रम के साथ ही स्कूल परिसर में रासेयो द्वारा रोपण किये गए पौधों को पानी देने का भी कार्यक्रम संपादित हुआ। उपरोक्त कार्यक्रम सम्पन्न करने पश्चात एक परिचर्चा का आयोजन कर छात्र-छात्राओं का अभिमुखीकरण कर एक दिवसीय व विशेष शिविर संबंधी जानकारी देकर उसके महत्व को बताया गया। परिचर्चा में उपसरपंच रूपन साय सिदार मुख्य अतिथि लोहार सिंह नाग सचिव पतरापाली, भूतपूर्व रासेयो छात्र संगठन के अध्यक्ष कैलाश राम यादव, उपाध्यक्ष खिरोधर यादव, सचिव घनश्याम यादव, सांस्कृतिक प्रभारी डॉ ईश्वर प्रसाद राठिया, पेडमास्टर रामप्रसाद राठिया, विशेष सलाहकार मधुसूदन यादव, दीपक साहू, कुलदीप यादव, दुर्योधन यादव विशेष सहयोगी के रूप में अनिल मिंरे रीडर तहसीलदार पत्थलगांव की गरिमा उपस्थिति में मीडिया की ओर से हरि जयसवाल व मनोरंजन दास महन्त प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम अधिकारी ने उनके योगदान के लिए ज्ञापित कर कार्यक्रम समाप्ति की घोषणा किया।

कालेज में संविधान दिवस का आयोजन

समवेत शिखर संवाददाता

पत्थलगांव। शोभा सिंह शासकीय महाविद्यालय मे आज 26 नवम्बर को संविधान दिवस के उपलक्ष मे कार्यक्रम का आयोजन किया गया । महाविद्यालय के सभागार में संविधान निर्माता भारत रत्न डॉ. भीमराव अम्बेडकर के प्रतिमा पर दीप प्रज्वलित करके एवं उनके योगदान को स्मरण करते हुए विनम्र श्रद्धांजली देकर कार्यक्रम की शुरुआत किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो0 डी. के. अम्ब्रेला द्वारा समस्त छात्र-छात्राओं एवं संस्था के सभी शैक्षणिक एवं अशैक्षणिक स्टाफ के सदस्यों के मौजूदगी मे संविधान की प्रस्तावना का वाचन कराया गया तत्पश्चात प्राचार्य महोदय जी के द्वारा संविधान की महत्ता एवं मानव जीवन में इसकी प्रासंगिता पर विस्तृत व्याख्यान दिया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक प्रो0 आर0एस0 कांत के द्वारा संविधान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर विस्तृत व्याख्या किया गया 7 इसी क्रम में रसायन शास्त्र के विभागाध्यक्ष प्रो0 अनुपमा प्रधान एवं प्रो0 जे0 के0 भगत के द्वारा क्रमशः संविधान की महत्व एवं इसकी जानकारी देश के प्रत्येक लोगों को अनिवार्य रूप से हो संविधान के ज्ञान के अभाव मे हमारा अधिकार सुरक्षित नहीं रहेगा विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला गया एवं समस्त छात्र छात्राओं को संविधान की गहन अध्ययन एवं अपने जीवन में अमल में लाने हेतु प्रेरित किया गया 7 कार्यकम का सफल संचालन महाविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यक्रम अधिकारी एवं राजनीतिशास्त्र के विभागाध्यक्ष प्रो.टी.आर.पाटले द्वारा संविधान की महत्ता पर स्लोगन एवं संवैधानिक मूल्य का व्याख्या करते हुए किया गया। तत्पश्चात संवैधानिक नियमों एवं मूल्य से सम्बन्धित प्रश्नावली तैयार कर प्रतियोगिता परीक्षा का आयोजन किया गया इसमें प्रथम, द्वितीय , तृतीय आने वाले प्रतिभागियों को क्रमशः प्रो0 पाटले द्वारा 1051 रु, प्रो0 आर0 एस 0 कान्त द्वारा 751रु ' एवं प्रो0 अनुपमा प्रधान द्वारा 551रू पुरस्कार देने की घोषणा किया कार्यक्रम में प्रो0 डी0आर0 मिंज , साहू, गोपाल प्रधान , श्रीमती यादव,विद्याधर पटेल, अभिषेक विक्रमजीत सिंह, शतीष खलखो, चौहान, गीतांजली प्रधान, अमिला सुनीता पटेल, संजय बघेल, अनिरूम्मा लकडा के अलावा महाविद्यालय कर्मचारीगण उपस्थित रहे। विशिष्ट अति रूप में व्यवहार न्यायालय पत्थलगा प्रतिनिधि के रूप में सुरेश भगत उपस्थि कार्यक्रम के अन्त म महाविद्यालय के प्रभारी डॉ. आर.के. कुर्रे द्वारा नेक मूल्यां छात्र छात्राओं की भूमिका को रेखांकित हुए प्रेरणादायी उद्बोधन पश्चात आभार किया गया। कार्यक्रम को सफल बन राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयं सेवकों की भूमिका रही।

णतीय प्रतियोगिता में रोचक मॉडल प्रस्तुत कि महाविद्यालय शोभा सिंह के छात्राओं ने

छत्तीसगढ़–ांव।

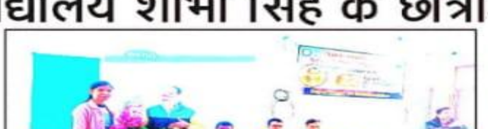

दिवस के उपलक्ष्य में ा सिंह महाविद्यालय में मॉडल प्रतियोगिता का आयोजन किया समें प्रख्यात भारतीय ोनिवास रामानुजन की गणित विभाग के द्वारा तियोगिताएं कराई गई। के मुख्य अतिथि डीके ाचार्य विशिष्ट अतिथि ंत व डॉ. एसके टोप्पो पकगण टी. आर पाटले, ्धान, एसके मारकंडे, ू व पूनम चौहान की में सरस्वती पूजन द्वारा का शुभारंभ किया गया। निर्णायक मंडली द्वारा ेंटेशन व मॉडल का किया गया। गणितीय ोगिता में विद्यार्थियों ने ईमारत की ऊंचाई मापने, गणित के फ़ार्मूले, पाइथागोरस प्रमेय तथा वर्ग संबंधी रोचक मॉडल का प्रदर्शन किया। दैनिक जीवन में गणित का उपयोग विषय पर विद्यार्थियों ने अत्यंत सुंदर पोस्टर प्रस्तुत किया। चुन्नी साहू एमएससी फ र्स्ट सेम, विद्याधर नाथ एमएससीफ र्स्ट सेम, राहुल दास, आशीर्वाद भारतेंदु बीएस सी तृतीय वर्ष द्वारा पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन प्रस्तुत किया गया। तैयबा परवीन, गंगोत्री भगत ने गणित दिवस का इतिहास व रामानुजन संख्या के बारे में जानकारी दी। मॉडल प्रतियोगिता में सिमरन यादव, राकेश कुमार व प्रशांत दास, गौरव अग्रवाल व दीपिका अ क्रमशः प्रथम द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ। प्रतियोगिता में मौस दीपिका अग्रवाल, गौरव को क्रमशः प्रथम द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ। अंत में के उद्बोधन पश्चात गणित शैलेंद्र साहू के द्वारा धन्य किया गया कार्यक्रम क सुश्री अनुपमा प्रधान द्व गया। विद्यार्थियों ने इस को अत्यंत रुचिकर व पाया।

जोहार छत्तीसगढ़–पत्थलगांव।

ठाकुर शोभा सिंह शासकीय महाविद्यालय पत्थलगांव में 73 वां एनसीसी दिवस का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम में एनसीसी के कैडेटों द्वारा महाविद्यालय मे नवनिर्मित वनस्पति उद्यान एवं विवेकानंद उद्यान में वृक्षारोपण किया गया। आंवला, लीची, सीताफल, जामुन जैसे फलदार वृक्ष तथा सुंदर फूलों का पौधा रोपण किया गया तत्पश्चात महाविद्यालय के नेक प्रभारी डॉ. आरके कुर्रे द्वारा कैडेटों को एकता और अनुशासन का शपथ दिलाया गया। कैडेटों द्वारा एनसीसी गान एवं मार्च पास्ट भी किया गया। कार्यक्रम के दौरान डॉ. कुर्रे ने एनसीसी दिवस का बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित किया तथा एनसीसी के स्थापना उद्देश्य पर प्रकाश डाला। केडेटों को अनुशासित जीवन जीने के लिए प्रेरित किया। उदबोधन के इसी क्रम में महाविद्यालय के अतिथि प्राध्यापक शैलेंद्र साहू कहा कि एनसीसी हमें एकता और अनुशासन में रहकर जीवन जीने की कला सिखाती है। अनुशासन हमारे जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण मायने रखता है इसलिए हमें एनसीसी के माध्यम से अपना व्यक्तित्व का विकास कर संयमित तथा अनुशासित रहकर देश सेवा के लिए सदैव तत्पर रहना चाहिए। गोपाल प्रधान ने कहा की एकता और अनुशासन का पाठ सिर्फ एक सैनिक में ही नहीं हम सब में होना चाहिए, इस तरह उन्होंने कैडेटों से आह्वान किया आप सभी अपने जीवन में अनुशासन को बनाए रखें यह आप की ओर से हमारे मानव समाज को एक महत्वपूर्ण उपहार होगा। महाविद्यालय के स्टाफ में नरेश नायक उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में महाविद्यालय के अतिथि

अंतर महाविद्यालयीन खो-खो प्रति[illegible] में ठाकुर शोभा सिंह कालेज वि[illegible]

जोहार छत्तीसगढ़–पत्थलगांव।

उच्च शिक्षा विभाग छत्तीसगढ शासन द्वारा शिक्षण सत्र 2021–22 के लिए जारी शैक्षणिक कैलेण्डर में दिये गये दिशा निर्देश के अनुरूप संत गहिरा गुरु विश्वविद्यालय अम्बिकापुर के तत्वाधान में सेक्टर स्तरीय अन्तर महाविद्यालयीन बालक वर्ग खो-खो प्रतियोगिता का आयोजन श्यामा प्रसाद मुखर्जी शासकीय महाविद्यालय सीतापुर में 29 दिसंबर 2021 को किया गया। इस प्रतियोगिता मे सरगुजा सम्भाग के विभिन्न महाविद्यालय के टीमों ने हिस्सा लिया। ठाकुर शोभासिंह शासकीय महाविद्यालय की टीम और पं रेवती रमण मिश्र शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय सूरजपुर [illegible] हुए रोमांचक मुकाबले के पश्चात ठाकुर शोभा सिंह शासकीय महाविद्यालय पत्थलगांव की टीम विजयी घोषित हुई। इस तरह सरगुजा विश्वविद्यालय में पत्थलगांव महाविद्यालय के छात्रों ने एक बार फिर अपने संस्था का नाम रोशन किया है। इस प्रतियोगिता के पश्चात् राज्य स्तर की प्रतियोगिता हेतु अनूप मिंज बीएससी भाग दो, विनय कुमार एक्का बीए भाग तीन, दिनेश कुमार [illegible] भाग तीन का चयन [illegible] विश्वविद्यालय की टीम [illegible] हुआ है। इस अवसर [illegible] विद्यालय के प्राचार्य प्रो. [illegible] अम्ब्रेला, वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. [illegible] के टोप्पो, श्रीआर एस कांत, [illegible] आर पाटले, डॉ आर के कुर्रे, [illegible] प्रधान मेडम, एस के मारकण्[illegible] क्रीडा प्रभारी जेके भगत, शैले[illegible] कुमार साहू एव समस्त शैक्षणिक एवं अशैक्षणिक स्टाफ विजेता टीम के खिलाड़ियों को बधाई एवं [illegible]

खो-खो प्रतियोगिता में ठाकुर शोभा सिंह शासकीय महाविद्यालय पत्थलगांव की टीम विजयी

कबड्डी प्रतियोगिता मे[illegible] [illegible]सकीय महाविद्यालय प[illegible]

[illegible]त्तीसगढ़ शासन उच्च शिक्षाविभाग द्वारा निर्धारित[illegible] के अनुसार अन्तरमहाविद्यालयीन महिला वर्ग से क[illegible] का आयोजन होलिक्रास महिलामहाविद्यालयमेंदिनांक[illegible] को सम्पन्न हुआ। इस प्रतियोगिता में सरगुजा संभाग [illegible] महाविद्यालय की टीम भाग लिया। ठाकुर शोभा सिंह श[illegible] महाविद्यालय के खिलाडियों ने सभी मैचों मे अपनी दबद[illegible] रखते हुए अन्तिम फाईनल मैंच विजय भूषण सिंह देवकन्यामहाविद्यालय जशपुर नगर की टीम को पछाड़ते हु[illegible] टीम घोषित हुई। इस जीत से महाविद्यालय परिवार मे खुशी [illegible] चरम पर है। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो० डी[illegible] अम्ब्रेला, एनसीसी अधिकारी डॉ. एस के टोप्पो, राष्ट्रीय सेवा य[illegible] कार्यक्रम अधिकारी प्रो० टी आर पाटले, वरिष्ठ प्राध्यापक प्रो० [illegible] एस कान्त, नेक प्रभारी डॉ. आर के कुर्रे, प्रो० अनुपमा प्रधान, [illegible] एस के मारकण्डे, प्रो० मिंज मेडम, क्रिड़ा विभाग के प्रभारी प्रो० [illegible] [illegible] अशैक्षणिक स्टाफ सम्मिलित रूप से सं[illegible]

[illegible] में स्वयंसेवकों ने बहाया पसीना

होलिक्रास महिला महाविद्यालय में अ[illegible] महिला वर्ग कबड्डी प्रतियोगिता [illegible]

जोहार छत्तीसगढ़–पत्थलगांव।

छत्तीसगढ़ शासन उच्च शिक्षाविभाग द्वारा निर्धारित शैक्षणिक कैलेण्डर के अनुसार अन्तरमहाविद्यालयीन महिला वर्ग से कबड्डी प्रतियोगिता का आयोजन होलिक्रास महिला महाविद्यालय में 7 दिसंबर 2021 को सम्पन्न हुआ। इस प्रतियोगिता में सरगुजा संभाग के विभिन्न महाविद्यालय की टीम भाग लिया। ठाकुर शोभा सिंह शासकीय महाविद्यालय के खिलाड़ियों ने सभी मैचों मे अपनी दबदबा कायम रखते हुए अन्तिम फाईनल मैंच विजय भूषण सिंह देव कन्या महाविद्यालय जशपुर नगर की टीम को पछाड़ते हुए विजेता टीम घोषित हुई। इस जीत से महाविद्यालय परिवार मे खुशी की लहर चरम पर है।

इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. डी. के. अम्ब्रेला, एनसीसी अधिकारी डॉ. एस के टोप्पो, राष्ट्रीय सेवा योजना के

भारत माता BHARAT MATA

उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रैश्चैव दक्षिणम् ।
वर्षं तत् भारतं नाम भारती यत्र संततिः।। -विष्णु पुराण